परिशिष्ट 18

/यीशु मसीह/
यीशु मसीह का दूसरा आगमन

खोज और चर्चा करें। बाइबल हमें परमेश्वर के दूसरे आगमन के बारे में क्या बताती है?

क. मसीहियों को विश्वातयोग्य और सर्तक होना चाहिए

मत्ती अध्याय 24 का संदेश यह है कि मसीहियों को सतर्क रहना चाहिए और अपनी दृष्टि मसीह के दूसरे आगमन पर रखनी चाहिए, जो न्याय करता है और प्रतिफल देता है। इन अध्यायों में भविष्यवाणियाँ एक ओर मसीह के चेलों के निकट भविष्य और दूसरी ओर अंतिम समय में होने वाली घटनाओं का उल्लेख करती हैं। यरूशलेम पर आने वाला न्याय (शिष्यों के निकट भविष्य में) और मसीह के दूसरे आगमन पर (अंतिम समय में) पूरी दुनिया का अंतिम न्याय "अंतिम बातों" के विषय में एक शिक्षण में एक साथ बुने हुए हैं। यरूशलेम के ऊपर आने वाला विनाश भविष्य की वास्तविकता के दृष्टांत (प्रकार) के रूप में कार्य करता है, जो अंतिम समय (विरोधी-प्रकार) में पूरी दुनिया पर आने वाला निश्चित विनाश है।

(1) मत्ती 23:37 - 24:3. अवसर।

इस शिक्षण का अवसर यरूशलेम पर यीशु मसीह का विलाप और शिष्यों के दो प्रश्न थे।

(2) मत्ती 24:4-14. संकट का आरम्भ।

कई क्लेश (जैसे युद्ध, अकाल और भूकंप) दुनिया के सभी देशों को राज्य के सुसमाचार की घोषणा के साथ-साथ होंगे। ये सभी चीजें होनी हैं, परन्तु ये क्लेश (यूहन्ना 16:33; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 7:14) अभी अंत नहीं हैं।
मत्ती 24:4-14 यीशु के पहले आगमन और दूसरे आगमन के बीच लंबी अवधि का एक भाग है।

(3) मत्ती 24:15-20. यरूशलेम का क्लेश।

नए नियम की अवधि के अंत में महान क्लेश, निकट भविष्य में यरूशलेम के क्लेश से पहले होगा।

पद्य 15 में यीशु दानिय्येल में घृणा के विषय में भविष्यद्वाणी को संदर्भित करता है जो उस उजाड़ का कारण है होती है जो पवित्र स्थान (मंदिर) (दानियेल 9:27)[32] में खड़ी होगी।

यरुशलेम और यहूदिया के इस क्लेश के विषय में दानिय्येल की भविष्यद्वाणी 167 ई.पू.में पूरी हुई थी। जब सेल्यूकस राजा, एंटिओकस चतुर्थ एपिफेनेस यरूशलेम के लूटने और मंदिर के अपवित्र होने करने का कारण बना । अज्ञात-लेखकीय पुस्तक, 1 मक्काबीस 1:41-57 में इस घटना का वर्णन इस प्रकार है:

> [41] तब राजा ने अपने पूरे राज्य को लिखा कि सभी एकता में आ जाएँ,
> [42] और प्रत्येक को अपने रीति-रिवाजों को छोड़ देना चाहिए।

32 दानिय्येल 9:27 "और वह प्रधान 'एक सप्ताह' के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बान्धेगा, परन्तु 'आधे सप्ताह' के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़ने वाली घृणित वस्तुएं दिखाई देंगी और निश्चय से ठनी हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़ने वाले पर पड़ा रहेगा।"

[43] सभी अन्यजातियों ने राजा की आज्ञा स्वीकार कर ली। इस्राएल से भी बहुतों ने ख़ुशी से उसका धर्म अपनाया; उन्होंने मूर्तियों की बलि दी और सब्त के दिन को अपवित्र किया।
[44] और राजा ने दूतों द्वारा यरूशलेम और यहूदा के शहरों को पत्र भेजे; उसने उन्हें वहाँ से अपरिचित रीति-रिवाजों का पालन करने का,
[45] प्रभु के भवन में होमबलि और बलिदान और पेय भेटों को छोड़ने, सब्त और पर्वों को अपवित्र करने,
[46] प्रभु के भवन और याजकों को अपवित्र करने का,
[47] मूर्तियों के लिए ऊँचे स्थान और मंदिर और मठ का निर्माण करने, सूअर और अशुद्ध जानवरों को बलिदान करने
[48] और अपने बेटों को खतनारहित छोड़ने का निर्देश दिया।
उन्हें हर अशुद्ध और अपवित्र चीज से स्वयं को घृणित बनाना था,
[49] ताकि वे व्यवस्था को भूल जाएं और सभी अध्यादेशों को बदल दें।
[50] "और जो राजा की आज्ञा नहीं मानेगा वह मार दिया जाएगा।"
[51] ऐसे शब्दों में उसने अपने पूरे राज्य को लिखा। और उसने सभी लोगों के ऊपर निरीक्षक नियुक्त किए और यहूदा के शहरों को शहर से शहर, बलिदान करने की आज्ञा दी।
[52] बहुत से लोग, सभी जिन्होंने व्यवस्था को छोड़ दिया, उनके साथ जुड़ गए, और उन्होंने क्षेत्र में दुष्टता की;
[53] उन्होंने इस्राइल को उनके पास शरण के हर स्थान में छिपा दिया।
[54] अब किसलेव के पंद्रहवें दिन, एक सौ पैंतालीसवें वर्ष में (312 ई.पू.में सेल्यूकस के राजवंश आरम्भ से गणना की गई, इस प्रकार दिसंबर 167 ई.पू.), उन्होंने होमबलि की वेदी उजाड़ दिया (तुलना करें मत्ती 24:15)। उन्होंने यहूदा के आसपास के शहरों में ऊँचे स्थान भी बनवाए।
[55] और ऊँचे स्थानों के द्वारा पर और गलियों में धूप जलाई।
[56] व्यवस्था की पुस्तकें (जैसे बाईबल) जो उन्हें मिलीं, उन्हें टुकड़ों में फाड़ दिया और आग से जला दिया।
[57] जहाँ किसी के पास वाचा की पुस्तक पाई गई, या यदि किसी को व्यवस्था का पालन करता हुआ पाया गया, तो राजा के आदेश अनुसार उसे मृत्यु दंड दिया गया।

मत्ती 24:15-20 में यीशु कहता है कि दानिय्येल की यह भविष्यद्वाणी (एक महान क्लेश के विषय में) दूसरी बार पूरी होगी। तब यह विशेष रूप से *उस समय* यरूशलेम में मंदिर और लोगों पर ध्यान देगी।

यरूशलेम का यह दूसरा महान क्लेश 70 ई.पू. में पूरा हुआ था जब रोमी सम्राट, टाइटस ने यरूशलेम को घेर लिया और जीत लिया। अन्यजाति सैनिकों ने यरूशलेम में और मंदिर में उन मानकों को अंजाम दिया, जिन पर रोमी मूर्तियों को दर्शाया गया था (इस प्रकार, एक और घृणित काम जिसके कारण सब उजाड़ हुआ) (लूका 21:20-24)[33]।

हालाँकि, यीशु का कहना था कि 70 ई.प. में यरूशलेम और मंदिर का यह क्लेश इस युग का अंत नहीं होगा (अर्थात यह नए नियम की अवधि का पूरा अंत नहीं होगा, जो कि मसीह के दूसरे आगमन के साथ समाप्त होना है।), क्योंकि यरूशलेम को अन्यजातियों द्वारा रौंदा जाएगा (लंबे समय तक), जब तक कि अन्यजातियों का समय पूरा नहीं होगा (लूका 21:24; तुलना करें रोमियों 11:25; प्रकाशितवाक्य 11:2)।

यरूशलेम के ये क्लेश (दूसरी शताब्दी ई.पू. और पहली शताब्दी ई.स. में) बाद में हुए दुनिया के इतिहास में हुए क्लेशों (भयावहता) के *पूर्वाभास* हैं (तुलना करें मत्ती 24:4-14)। मसीह के पहले आगमन से दूसरे मसीह के आने तक मसीहियों का उत्पीड़न और सताव जारी रहेगा। यही कारण है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु के प्रथम आगमन और यीशु के

[33] **लूका 21:20-24** 20 जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है। 21 तब जो यहूदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएं, और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएं; और जो गावों में हो वे उस में न जांए। 22 क्योंकि यह पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे, जिन में लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएंगी। 23 उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय, हाय, क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर बड़ी आपत्ति होगी। 24 वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुंचाए जाएंगे, और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा।

दूसरे आगमन के बीच की अवधि को "महान क्लेश" कहती है (प्रकाशितवाक्य 7:9,14)[34]।

(4) मत्ती 24:21-26. मसीह के दूसरे आगमन से कुछ समय पहले का महान क्लेश।

नए नियम की अवधि के आरम्भ में यरूशलेम का क्लेश महान था, परन्तु नए नियम की अवधि के अंत का क्लेश मानव इतिहास में सबसे बड़ा क्लेश होगा (पद्य 21)! पूरी दुनिया में मसीहियों पर अत्याचार और सताव होगा। यह अंतिम महान क्लेश सभी पहले आए क्लेशों का अंत होगा (तुलना करें मत्ती 24:4-14)। यह नए नियम की अवधि को समाप्त करेगा।

इस अंतिम महान क्लेश के दौरान कई झूठे भविष्यद्वक्ता और झूठे मसीहा होंगे जो मसीहियों को धोखा देने के लिए महान चमत्कार करेंगे। हालाँकि, यीशु मसीह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि चुने हुए मसीहियों को धोखा देना असंभव है (मत्ती 24:24; तुलना करें उहन्ना 17:12)[35]! परन्तु मसीही निश्चित रूप से महान क्लेश से गुजरेंगे।[36]

(5) मत्ती 24:27-31. मसीह का दूसरा आगमन।

यह अंतिम महान क्लेश मसीह के दूसरे आगमन द्वारा समाप्त किया जाएगा।

- दूसरा आगमन हर जगह दिखाई देगा, जैसे बिजली पूर्व से पश्चिम तक दिखती है (मत्ती 24:27; तुलना करें वचन 29)।
- दूसरा आगमन हर जगह सुनाई देगा, प्रभु के जोर से आदेश और तुरही की एक जोरदार आवाज़ के कारण जो सभी मृतकों को उनकी कब्र में फिर से जीवित करेगी (मत्ती 24:31; यूहन्ना 5:28-29; 1 थिस्सलुनिकियों 4:16)।
- दूसरा आगमन हर किसी के द्वारा अनुभव किया जाएगा: स्वर्गदूत चुने हुओं को (वास्तविक मसीही) हवा में यीशु मसीह का स्वागत करने के लिए इकट्ठा करेंगे (मत्ती 24:40क, 41क; सीएफ. 1 थिस्सलुनीकियों 4:17; 2 थिस्सलुनीकियों 1:10), परन्तु सभी गैर-मसीहियों और अविश्वासियों को पहले ब्रह्मांड में निकायों के हिंसक झटकों का अनुभव करने के लिए छोड़ देंगे (इब्रानियों 12:26-27; प्रकाशितवाक्य 6:12-17) और बाद में मसीह के फैसले से पहले हवा में सिंहासन के लिए चलाए जाने के बाद; वही अंतिम दिन (मत्ती 24: 40 ब, 41ख; तुलना करें मत्ती 25: 31-33; प्रकाशितवाक्य 20: 11-12)।
- दूसरा आगमन खगोलीय पिंडों को हिला देगा । वे दूर भाग जाएंगे, एक गर्जन के साथ गायब हो जाएंगे और तत्व आग से नष्ट कर दिए जाएंगे (मत्ती 24:29; 2 पतरस 3:10-13; प्रकाशितवाक्य 6:12-17; प्रकाशितवाक्य 20:11)। इस प्रकार लोगों का अंतिम न्याय ऊपरी जगहों (जैसे वायु) में होगा (मत्ती 24:31; मत्ती 25:31-32; 1 थिस्सलुनिकियों 4:17) और ब्रह्मांड और पुरानी पृथ्वी के अंतिम न्याय के साथ होगा।
- दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा (मत्ती 24:36)।

(6) मत्ती 24:32-35. अंजीर के पेड़ का दृष्टांत।

नियमावली 12, पूरक 16 में इस दृष्टांत की व्याख्या देखें। जब चेले (यीशु मसीह के) इन सभी चीजों को होते हुए देखते हैं, जो कि यरूशलेम में मंदिर को उजाड़ बनाने वाली घृणा के रूप में सामने आने का कारण होंगी (1शताब्दी ईस्वी में),

---

[34] **प्रकाशितवाक्य 7: 9,14** 9 इस के बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने खड़ी है। 14 मैं ने उस से कहा; हे स्वामी, तू ही जानता है: उस ने मुझ से कहा; ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकल कर आए हैं; इन्होंने अपने अपने वस्त्र मेम्ने के लहू में धो कर श्वेत किए हैं।

[35] **यूहन्ना 17:12** 12 जब मैं उन के साथ था, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा की, मैं ने उन की चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से काई नाश न हुआ, इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो।

[36] ऐतिहासिक प्रगति प्रणाली की शिक्षा अपने अनुयायियों आकर्षक है, क्योंकि वह सिखाती है कि कलीसिया महान क्लेश से नहीं गुजरेगी। यह हालाँकि सच नहीं है!

तब उन्हें (शिष्यों को) पता चलेगा कि मंदिर का विनाश निकट है। यह मसीह का उसके शिष्यों के पहले प्रश्न का उत्तर है (मत्ती 24:3क)।

(7) मत्ती 24:36-44. मसीहियों को हमेशा सतर्क और तैयार रहना चाहिए।

नूह के दिनों में बाढ़ अचानक, अप्रत्याशित और सभी द्वारा अनुभव की गई थी! इसी प्रकार, मसीह का दूसरा आगमन अचानक, अप्रत्याशित और सभी द्वारा अनुभव किया जाएगा! दूसरा आगमन पूरी रीति से गैर-मसीहियों और मसीहियों दोनों के लिए एक जैसा अप्रत्याशित होगा। किसी को पता नहीं चलेगा कि यह कब होगा।

अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह अपनी अनंत और हमेशा की शानदार उपस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत नहीं करेगा, क्योंकि मसीही स्वीकार किए जाएंगे और गैर-मसीही पीछे छूट जाएंगे (मत्ती 24:40-41)!

(8) मत्ती 24:45-51. मसीहियों को विश्वासयोग्य सेवक होना चाहिए।

विश्वासयोग्य और बुद्धिमान सेवक के दृष्टांत से पता चलता है कि क्योंकि मसीही दूसरे आगमन के समय को नहीं जानते हैं, इसलिए जब मसीह आए तो वह अवश्य उन्हें राज्य में काम करता हुआ पाए!

(9) परमेश्वर के राज्य के विषय में अलग-अलग अपेक्षाएँ।

जबकि यहूदियों को अपेक्षा थी कि राज्य इस्राएल तक सीमित रहेगा (यहेजकेल 37:21-28; मत्ती 20:21; यूहन्ना 6:15; प्रेरितों1:6), यीशु मसीह अपनी शिक्षाओं और दृष्टान्तों में निम्नलिखित स्पष्ट करता है:

- परमेश्वर का राज्य उसके पहले आगमन के साथ आ चुका है (मरकुस 1:14-15; मत्ती 12:28-29)।
- राज्य में सभी देशों के लोग सम्मिलित हैं (मत्ती 8:11-12; मत्ती 21:42-44)।
- राज्य का सुसमाचार (लूका 16:16; प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:24-25; 28:23, 31) अनुग्रह का सुसमाचार है और सभी देशों को घोषित किया जाएगा (मत्ती 24:14)।
- राज्य एक वास्तविक, परन्तु आध्यात्मिक राज्य है, लोगों के हृदयों और जीवन में यीशु मसीह का एक शासन है (लूका 17:20-21; यूहन्ना 18:36)।
- राज्य निरन्तर बढ़ता है (मरकुस 4:26-32) जब तक कि वह अपने अंतिम पूर्ण चरण (नया आकाश और नई पृथ्वी) को उसके दूसरे आगमन (मत्ती 13:36-43; 2 पतरस 3:10-13) पर प्राप्त नहीं कर लेता।

ख. स्वर्ग में मध्यवर्ती अवस्था

1. पृथ्वी पर मानव शरीर में क्षणिक जीवन।

पृथ्वी पर क्षणिक जीवन स्वर्ग में अनन्त जीवन के विपरीत है। बाइबल में इसे इस प्रकार दर्शाया गया है:

- अब्राहम (2000 ई.पू.), एक विदेशी देश में तम्बू में एक विदेशी और अजनबी के रूप में रहता था, स्वर्गीय येरुशलम के लिए तत्पर था (प्रतीक: नींव वाला शहर, जिसका वास्तुकार और बनाने वाला परमेश्वर है) (इब्रानियों 11:8-16)।
- सांसारिक तम्बू (मिलाप का तम्बू) (1446 ई.पू.) रेगिस्तान में से होकर यात्रा के दौरान परमेश्वर के भवन के रूप में सेवा करता था और मोरिया पहाड़ पर निर्मित मंदिर निर्माण या उससे भी बेहतर स्वर्गीय मंदिर के विपरीत था (इब्रानी 8:5)।
- तंबुओं का पर्व (1446 ई.पू.) जिसके दौरान लोग तम्बू / झोपड़ियों में रहते थे, यह रेगिस्तान से होकर अपनी चालीस

वर्षों की यात्रा के दौरान इस्राएलियों का तंबुओं में रहने वाले जीवन का स्मरण था। यह वादा किए गए दूध और शहद बहने वाले देश के स्थायी घरों में रहने के विपरीत था जो कि परमेश्वर के लोगों की अनन्त विरासत का रूप है।

- यीशु मसीह का नश्वर मानव शरीर और पृथ्वी पर उसका जीवन (उसका देहधारण: "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच अपना तम्बू खड़ा किया") (यूनानी: एसकेनोसन) (यूहन्ना 1:14) उसके पुनर्जीवित महिमामय शरीर (यूहन्ना 2:19-22) और स्वर्ग में परमेश्वर के साथ उसके अनंत काल के विपरीत है (यूहन्ना 1:1; 12:27-28; 20:17)।
- पृथ्वी पर मसीही अपने तम्बू (अपने शरीर) में निवास करता है जब तक कि उसे मृत्यु द्वारा नष्ट नहीं कर दिया जाता है (यूनानी: एनालू) (फिलिप्पियों 1:23; 2 तीमुथियुस 4:6) या (यूनानी:काटालू) (2 कुरिन्थियों 5:1)।

2. स्वर्ग में एक महिमामय मानव शरीर के बिना मानव आत्मा की मध्यवर्ती अवस्था।

"धन्य हैं वे मृतक जो प्रभु में मर जाते हैं ... वे अपने श्रम से विश्राम करेंगे, क्योंकि उनके कर्म (पृथ्वी पर) उनका अनुसरण करेंगे (प्रकाशितवाक्य 14:13; तुलना करें 1 कुरिन्थियों 3:12-15)।

मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच की मध्यवर्ती अवस्था का वर्णन 2 कुरिन्थियों 5:1-10 और फिलिप्पियों 1:21-25 में किया गया है। प्रेरित पौलुस, मरने से पहले ही, मसीह के शीघ्र दूसरे आगमन की चाहत रखता है, क्योंकि वह "नग्न" पाए जाने के लिए तत्पर नहीं है। वह नहीं चाहता की उसके कपड़े उतारे जाएँ। (यूनानी: एकदूसास्थाई) (यानी मानव शरीर के बिना एक मानव आत्मा होना), परन्तु “कपड़े पहने हुए हो ”(यूनानी: एप+एंडूसास्थाई) (2 कुरिन्थियों 5:4)।

क्योंकि मरना जीवन की एक वास्तविकता है, वह "संसार को छोड़ने और मसीह के साथ रहने की इच्छा करता है, जो कि कहीं अधिक बेहतर है" (फिलिप्पियों 1:23)। उसे एहसास होता है कि "मांस / शरीर में रहना ईसाइयों के लिए अधिक आवश्यक है जो उसे सौंपा गया है (फिलिप्पियों 1:24)। उसे एहसास है कि "जब तक वह शरीर में घर पर है, वह प्रभु से दूर है" (2 कुरिन्थियों 5:6)। वह इन दो विचारों के बीच फँसा हुआ है, परन्तु फिर भी वह "शरीर से दूर (यूनानी: एकदेमेसाई एक) और घर पर प्रभु के साथ रहना पसंद करता है" (यूनानी: एन्डेमेसाई परोस) (2 कुरिन्थियों 5:8)।

अब जब वह अपने शरीर में रहता है, तो वह "अपने स्वर्गीय शरीर (अर्थात उसका पुनर्जीवित शरीर) को पहनने (शाब्दिक: कपड़ों के ऊपर कपड़े पहनने) की इच्छा रखता है, ताकि जो नश्वर (पूरी तरह से) शरीर है वह जीवन द्वारा समाप्त हो जाए (यूनानी: काटापिनो) (अनिश्चित काल) (2 कुरिन्थियों 5:2-4)। परमेश्वर एक मसीही के नश्वर शरीर का कब्र में परित्याग नहीं करेगा (तुलना करें। प्रेरितों 2:23-28)। कुछ भी और कोई भी एक मसीही (या यहाँ तक कि उसके मृत शरीर, कब्र में उसकी धूल) को मसीह में परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता है (रोमियों 8:38-39)! पुनर्जीवित शरीर को "परमेश्वर की ओर से भवन" कहा जाता है, "स्वर्ग में एक अनन्त घर, जो मानव हाथों द्वारा नहीं बनाया गया है" (2 कुरिन्थियों 5:1)। यह कहना है, एक मसीही के पुनर्जीवित शरीर को मानव माता-पिता के माध्यम से नहीं बनाया गया है (तुलना करें। मत्ती 22:30), लेकिन विशेष रूप से परमेश्वर के द्वारा। नया अमर पुनर्जीवित शरीर पुराने नश्वर शरीर को पूरी रीति से निगल जाएगा। यह निचे पहने कपड़ों के ऊपर ओवरकोट के रूप में (2 कुरिन्थियों 5:2-4) नश्वर धूल को ढक लेगा (यूनानी: एप + एंडुमाई)! पुनर्जीवित शरीर एक नया निर्मित शरीर नहीं होगा। यह मूल शरीर (तत्व, धूल) होगा जिसे ढक लिया गया होगा, अर्थात पूरी रीति से नवीनीकृत! पुनर्जीवित शरीर यीशु मसीह के महिमामय पुनर्जीवित शरीर के समान होगा (फिलिप्पियों 3:20-21)! वह "अमर" (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 21:4), "महिमामय, शक्तिशाली और आत्मिक" होगा

(1 कुरिन्थियों 15:42-44)।

पौलुस स्वर्ग में मध्यवर्ती अवस्था के दौरान किसी प्रकार के "शरीर" का उल्लेख नहीं करता है, क्योंकि वह "बिना कपड़ों के" है (उसके पास केवल एक मानवीय आत्मा है, परन्तु एक मानव शरीर के बिना)। वह मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों के पुनरुत्थान पर पुनर्जीवित शरीर का उल्लेख करता है। तब वह अपने स्वर्गीय निवास को "पहन" लेया। वह मसीह से एक महिमामय पुनर्जीवित शरीर प्राप्त करेगा।

3. स्वर्ग में एक महिमामय मानवीय आत्मा के साथ अवस्था।

जिस क्षण एक मसीही की मृत्यु हो जाती है, उसकी असिद्ध मानवीय आत्मा यीशु मसीह की सिद्ध मानवीय आत्मा के समान हो जाती है (1 यूहन्ना 3:1-3)।

मृत के पुनरुत्थान पर महिमामय मानवीय आत्मा को महिमामय पुनर्जीवित शरीर के साथ एक सच्चरित्र संघ में फिर से एकीकृत किया गया है। पुनर्जीवित मसीही "एक जीवन देने वाली आत्मा" होगा जिसमें पुनरुत्थान किए गए मसीह की पूर्ण समानता होगी। इसका अर्थ है कि मसीही आत्मिक और शारीरिक रूप से पूर्ण रीति और सिद्धता से पवित्र आत्मा के नेतृत्व में होंगे और पवित्र आत्मा के द्वारा चलाए जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:45-50: तुलना करें। गलातियों 5:16,18,25)।

परमेश्वर इस महिमामय भविष्य के लिए मसीहियों को वर्तमान समय में पवित्र आत्मा के रूप में जमा किया गया आश्वासन देकर तैयार करता है कि यह निश्चित रूप से होगा (2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5)!

परन्तु यीशु मसीह कब और कैसे लौटेगा?

ग. मसीह के दूसरे आगमन के चिन्ह

1. यीशु "अंतिम बातों" के विषय में बोलता है (मत्ती 24:1-3)

(1) दो प्रश्न।

चेलों ने यीशु से मानव इतिहास में घटने वाली अंतिम बातों के विषय में दो प्रश्न किए: "मंदिर और यरूशलेम का विनाश कब होगा?" (मत्ती 24:1-3क) और "किस चिन्ह (एकवचन) से हम तेरी वापसी और (बेहतर: अर्थात) युग के अंत को पहचानेंगे?" (मत्ती 24:3ख)। शिष्यों ने सोचा कि येरुशलम को युग के अंत में (यानी इस वर्तमान दुनिया में मानव इतिहास का अंत) नष्ट कर दिया जाएगा। हालाँकि, यीशु का भविष्यसूचक उत्तर एक ओर उन घटनाओं की ओर संकेत करता है, जो निकट भविष्य में में घटित होंगी (येरुशलम का क्लेश) और दूसरी ओर ऐसी घटनाओं की ओर जो अंत के समय में होंगी (उसके आगमन से पहले महान क्लेश)।

(2) यीशु के अपने शिष्यों के पहले प्रश्न का उत्तर (मत्ती 24:15-20 तुलना करें। लूका 21:7, 20-24क)।

उन्होंने यरूशलेम के बड़े क्लेश की बात की, जो 70 ई.पू. में हुआ था। उसने कहा कि दानिय्येल के समय में यरुशलम के क्लेश ने 70 ई.पू. में येरुशलम पर आ रही तबाही का और इसी प्रकार के अन्य संकट का भी पूर्वाभास किया जो दुनिया के भविष्य के इतिहास के अंत में होगा (पढ़ें मत्ती 24:4-14)। इसने उस अंतिम तबाही का चित्रण किया जो अंत के समय

में पूरी दुनिया के ऊपर आ जाएगी! पुराने नियम की कई "छायाओं" की तुलना करें, जो नए नियम की "वास्तविकताओं" की ओर संकेत करती हैं (कुलुस्सियों 2:16-17)।

चेलों के दूसरे प्रश्न में "और" शब्द का यूनानी में अर्थ है "यानी" या "अर्थात्"[37]। इस प्रकार, "इस युग का अंत" यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर होगा! दूसरे आगमन और अंत के बीच 1000 वर्ष की एक और अवधि नहीं होगी!

(3) यीशु के अपने शिष्यों के दूसरे प्रश्न का उत्तर (मत्ती 24:21-31)।

चिन्ह (एकवचन) बादलों पर मसीह का दृश्यमान और सुनाई देने योग्य वास्तविक दूसरा आगमन होगा (मत्ती 24:29ख-31)। परन्तु उसके आगमन से जल्द पहले "अंतिम महान क्लेश" होगा (मत्ती 24:21-29क)। यह सभी समयों का सबसे बुरा क्लेश होने के साथ-साथ क्लेश की सभी पिछली अवधियों का अंत होगा (मत्ती 24:4-14)।

आखिरी बातों के विषय में अपने शिक्षण में यीशु ने पहली सदी ई.पू. में यरूशलेम के क्लेश और उसके दूसरे आगमन से पहले के अंतिम महान क्लेश को जोड़ा है।

2. बहुत से चिन्ह होंगे (मत्ती 24:4-14)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले बहुत से चिन्ह होंगे जो इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि यह वर्तमान दुनिया समाप्त हो रही है:

(1) झूठे मसीह (मसीहा के रूप)
(2) दूसरे धर्मों के झूठे भविष्यद्वक्ता।
(3) युद्ध
(4) भुख
(5) भूकम्प
(6) गैर-मसीहियों द्वारा वास्तविक मसीहियों पर अत्याचार
(7) नाममात्र मसीहियों द्वारा धर्मत्याग (कलीसियाओं का खाली होना)
(8) परमेश्वर की आज्ञाओं की अवमानना
(9) प्रेम ठंडा पड़ना

ये सभी घटनाएँ होनी हैं, परन्तु ये अंत का संकेत नहीं देतीं (मत्ती 24:6)। वे मात्र "प्रसव पीड़ा का आरम्भ" हैं (मत्ती 24:8)। ये चिन्ह दुनिया के सभी देशों को सुसमाचार की घोषणा के द्वारा साथ भी हैं (मत्ती 24:14; मत्ती मत्ती 4:23; प्रेरितों 20:24-25)।

ये सभी चिन्ह (घटनाएँ) 70 ई.प. में "यरूशलेम के विनाश" से आरम्भ होकर तब तक होंगी "जब तक अन्यजातियों का समय पूरा नहीं हो जाता" (लूका 21:20, 24ख), अर्थात यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक।

---

[37] यूनानी: काई, अर्थप्रकाशक, यानी एक शब्द या वाक्यांश "काई" के माध्यम से दूसरे शब्द या वाक्यांश के साथ जुड़ता है, यह समझाने के उद्देश्य से कि इससे पहले क्या आता है। इसे शब्दों के साथ अनुवादित किया जाना चाहिए: "और इसलिए", "यानी", "अर्थात्" (मत्ती 8:33; 24:3; यूहन्ना 9:37)।

3. तीन बहुत स्पष्ट चिन्ह होंगे (मत्ती 24:14, 21-31)

(1) एक बहुत लंबी अवधि।

सबसे पहले सभी राष्ट्रों को गवाही के रूप में राज्य के सुसमाचार को घोषित करने की बहुत लंबी अवधि होगी (मत्ती 24:14)।

(2) एक बहुत छोटी अवधि।

यह महान क्लेश की एक छोटी अवधि के बाद का समय होगा। यह अंतिम मसीह विरोधी के तहत अंतिम क्लेश होगा (मत्ती 24:21-29क)।

इन दो चिन्हों का उपयोग दूसरे आगमन के समय की गणना करने के लिए नहीं किया जा सकता है (मत्ती 24:36, 42)।

(3) दूसरा आगमन।

अंत में बादलों पर यीशु मसीह की विस्मयकारी वापसी होगी (मत्ती 24:29ख-31)। यह घटना सभी के लिए अचानक और अप्रत्याशित होगी! यह दुनिया और उसके इतिहास के अंत का "चिन्ह (निर्णायक)" है (मत्ती 24:3)।

घ. एक बहुत लंबी अवधि

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक एक इतिहास की पुस्तक नहीं है जो कालानुक्रमिक क्रम में लिखी गई है, परन्तु सात समांतर खंडों में एक सर्वनाश है और प्रत्येक खंड "चित्रों और चिन्हों में वर्णन करता है" (यूनानी: सेमाईनो) (अनिश्चित काल) (प्रकाशितवाक्य 1:1)[38] संपूर्ण नया नियम यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर यीशु के दूसरे आगमन और परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण के आने तक की अवधि।

1. नए नियम की लंबी अवधि को "1000" और "3½" संख्याओं द्वारा प्रतीकित किया गया है।[39]

(1) प्रतीकात्मक 1000 वर्ष की अवधि।

बाइबल में संख्या "3" त्रिएक परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करती है (तुलना करें मत्ती 28:19)। बाइबल में "10" संख्या पृथ्वी पर लोगों के सम्बन्ध में पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है और बाइबल में संख्या "1000" (10x10x10) त्रिएक परमेश्वर द्वारा निर्धारित पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार, संख्या "1000 वर्ष" का शाब्दिक होने का अभिप्राय नहीं है, परन्तु पृथ्वी पर परमेश्वर की योजना पूरी होने के लिए उसके द्वारा सभी पीढ़ियों में बीते समय (सीएफ. भजन 90:1 -4; भजन 105:8) की निर्धारित अवधि का प्रतिनिधित्व करता है (तुलना करें यशायाह 14:24, 26, 27)।
प्रकाशितवाक्य 20 प्रकाशितवाक्य 17-19, प्रकाशितवाक्य 12-14 और प्रकाशितवाक्य 8-11 के समानांतर है। 1000 वर्ष की अवधि:

- मसीह के पहले आगमन पर शैतान की बन्धुआई के साथ आरम्भ होती है (तुलना करें तुलना करें मत्ती12:28-29;

[38] प्रकाशितवाक्य 1:1। "(चित्रों और संकेतों में) दिखाता है कि जल्द ही क्या होने वाला है"।

[39] प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सभी संख्याएं प्रतीकात्मक रूप से शाब्दिक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो संख्या की शाब्दिकता से बढ़कर है। नियमावली 1, पाठ 10, कुंजी 5 देखें।

लूका 10:17-20; यूहन्ना 12:31-32; कुलुस्सियों 1:13; 2:15, इब्रानियों 2:14; 1 यूहन्ना 3:8; प्रकाशितवाक्य 12:5-12; प्रकाशितवाक्य 20:1-3)

- और शैतान की रिहाई के साथ समाप्त होती है, अंतिम लड़ाई (प्रकाशितवाक्य 20:7-10; प्रकाशितवाक्य 19:11-21; प्रकाशितवाक्य 11:7), मृतकों में से पुनरुत्थान और उसके दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)।

इस प्रकार, 1000 वर्ष की अवधि प्रतीकात्मक रूप से मसीह के पहले आगमन से मसीह के दूसरे आगमन तक पूरे नए नियम की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है।

(2) प्रतीकात्मक 3½ समय अवधि, या 42 महीने या 1260 दिन।

बाइबल में "3½" संख्या का भी शाब्दिक होने का अभिप्राय नहीं है, परन्तु बाइबल में दिए "कलेश की अवधि" का प्रतिनिधित्व करता है (1 राजाओं 17:1; दानिय्येल 7:25; 9:27; 12:7; लूका 4:25; याकूब 5:17)[40]। यहाँ यह नए नियम की लंबी अवधि को "महान क्लेश की अवधि" के रूप में संदर्भित करता है (प्रकाशितवाक्य 7:14)।
प्रकाशितवाक्य 11 प्रकाशितवाक्य 12-14 के समानांतर है।
लंबी अवधी:

- यीशु मसीह और कलीसिया के पहले आगमन पर आरम्भ होती है (यहाँ प्रतीक है:"महिला") जिसका "लंबी अवधि" (प्रकाशितवाक्य 12:5-6) के दौरान रेगिस्तान में ध्यान रखा गया है।
- और कलीसिया के विरुद्ध महान सताव पर समाप्त होती है (यहाँ प्रतीक है "दो गवाह") (प्रकाशितवाक्य 11:7-10), मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों का पुनरुत्थान (प्रकाशितवाक्य 11:11-12) अंतिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 11:18; 14:14-20) और अपने अंतिम चरण में परमेश्वर के राज्य की स्थापना (प्रकाशितवाक्य 11:15)।

"3½" संख्या बताती है कि पूरे नए नियम की अवधि के दौरान, शैतान और उसके सहयोगी: मसीह विरोधी, झूठे भविष्यद्वक्ता और वेश्याएं उसके बुरे अधिकार की इस अवधि को ईश्वरीय संख्या "7" तक लंबा करने का प्रयास करेंगे, परन्तु (संख्या "3½") के आधे रास्ते तक पहुँचने पर ही उसे अचानक और अप्रत्याशित रूप से छोटा कर दिया गया!

इस प्रकार, 3½ बार, या 42 महीने, या 1260 दिनों की अवधि प्रतीकात्मक रूप से मसीह के पहले आगमन से उसके दूसरे आगमन तक की पूरे नए नियम की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है।

2. बहुत लंबी अवधि आरम्भ में शैतान को बाँध दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 20:1-6)

(1) अपने पहले आगमन पर यीशु मसीह शैतान के कार्यों को नष्ट करने के उद्देश्य से आया था (यूहन्ना 3:8; इब्रानियों 2:14) ।

अपनी मृत्यु और जी उठने के द्वारा उद्धार के अपने पूर्ण कार्य के माध्यम से यीशु मसीह ने शैतान (प्रतीक: "मज़बूत आदमी") को "बाँध" (यूनानी: डियो) (अनिश्चित काल सक्रिय) दिया (मत्ती 12:29)। उसने बुराई करने हेतु शैतान की शक्तियों पर अंकुश / कटौती लगाई और उनको अति सीमित कर दिया। अपनी मृत्यु के माध्यम से उसने शैतानी शक्तियों

[40] संख्या 3½ उद्धार के इतिहास में "विभिन्न" उत्पीड़न की अवधियों" का प्रतीक है।

और सांसारिक प्राधिकारियों को निरस्त्र किया और उन पर जयवन्त हुआ (कुलुस्सियों 2:15)। उसने अपनी उन्नति प्राप्ति के द्वारा (क्रूस पर, उसके पुनरुत्थान के द्वारा, उसके स्वर्गारोहण द्वारा और स्वर्ग में अपनी सिंहासन प्राप्ति के द्वारा) उसने दुनिया के राजकुमार (यूनानी: हो आर्कोन) को (शैतान) (ध्यान दें: राजा नहीं) (यूनानी: बासीलियस) उसके पूर्व पद और शक्ति से हटा दिया और दुनिया भर के लोगों को अपनी ओर खींचता है (यूहन्ना 12:31-32)।

(2) शैतान के पास अभी भी बुराई करने की बहुत शक्ति है।

वह अभी भी क़ातिल और सभी झूठों का पिता है (यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 4:3-4), परन्तु "उसे राष्ट्रों को और धोखा देने से रोकने के लिए तब तक बाँध दिया गया है (यूनानी: डियो) (अनिश्चित काल सक्रिय) (मत्ती 12:29 में दिया जैसा वचन) जब तक (प्रतीकात्मक) हज़ार वर्ष समाप्त न हो जाएँ" (प्रकाशितवाक्य 20:2-3)।

3. बहुत लंबी अवधि के दौरान सुसमाचार घोषित किया गया है (मत्ती 24:14)

(1) 1000 वर्षों की इस प्रतीकात्मक अवधि के दौरान शैतान "अब राष्ट्रों को धोखा नहीं दे सकता" (प्रकाशितवाक्य 20:3)।

यीशु के पहले आगमन से पहले शैतान ने राष्ट्रों को अपने नियंत्रण में रखा (दानिय्येल 10:12-13,20)। परन्तु मसीह के पहले आगमन के बाद, चुने हुओं को उसके प्रभुत्व से बचाया गया और मसीह के राज्य में लाया गया है (कुलुस्सियों 1:13)। मसीह के पहले आगमन से पहले, शैतान ने परमेश्वर के सिंहासन के सामने विश्वासियों पर दोष लगाया (अय्यूब अध्याय 1 और 2), क्योंकि उनके पापों का अभी तक प्रायश्चित नहीं किया गया था। परन्तु मसीह के पहले आगमन के बाद, शैतान अब परमेश्वर के सामने विश्वासियों पर दोष नहीं लगा सकता है (प्रकाशितवाक्य 12:7-12; रोमियों 3:23-26; रोमियों 8:33-34), क्योंकि यीशु ने उनके पापों के लिए प्रायश्चित किया है (रोमियों 3:24-25; प्रकाशितवाक्य 12; 11)।

शैतान अब राष्ट्रों को धोखा / भटका (यूनानी: प्लानाओ) (अनिश्चित काल सक्रिय) नहीं सकता है, अर्थात्, वह अब यीशु मसीह (और मसीहियों) को दुनिया के सभी राष्ट्रों में सुसमाचार की घोषणा करने और सभी राष्ट्रों के भीतर शिष्य बनाने से रोक नहीं सकता है! यीशु ने सिखाया कि: "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा" (मत्ती 24:14) (भविष्य काल केवल भविष्य की भविष्यद्वाणी ही नहीं, परन्तु पूर्ण निश्चितता व्यक्त करता है)! सभी देशों में चेले बनाए जाएँगे (मत्ती 28:18-20)! इस वर्तमान दुनिया का अंत इस प्रकार तब होगा जब परमेश्वर के अनुसार सभी देशों (यूनानी: एथने) (लोगों के समूह, जैसे व्यवसायी, छात्र, धार्मिक समूह, आदि) को सुसमाचार की घोषणा कर दी जाएगी!

(2) 1000 वर्षों की इस प्रतीकात्मक अवधि के दौरान यीशु मसीह विजय प्राप्त करते हुए विजेता के रूप में बढ़ता है (प्रकाशितवाक्य 6:1-2; तुलना करें मत्ती 28:18)।

वह पूरी दुनिया में राज्य के बेटों को बोता है (मत्ती 13:37-38)। वह अपनी गेहूं को खलिहान में इकट्ठा करता है (मत्ती 3:12क)। वह सभी राष्ट्रों के लोगों को अपनी ओर खींचता है (यूहन्ना 12:32; तुलना करें फिलिप्पियों 2:9-11)।

सारांश में, बाइबल का परमेश्वर, दुनिया के सभी देशों के लोगों को अगणनीय संख्या में शैतान के प्रभुत्व (यानी बुरी दुनिया के राज्य) से मसीह के राज्य में लाता है (कुलुस्सियों 1:13)। इस प्रकार, यीशु मसीह अपनी कलीसिया का निर्माण करता

है और नरक के द्वार उस पर प्रबल नहीं हो पाएंगे (मत्ती 16:18)!

(3) "1000 वर्ष" या "3½ समय" की इस प्रतीकात्मक अवधि के दौरान शैतान और उसके सहयोगी मसीहियों और मसीह की कलीसिया का विरोध करेंगे।

नए नियम की लंबी अवधि के दौरान, "अज़गर समुद्र के किनारे पर खड़ा है", जबकि पशु समुद्र से बाहर आता है (प्रकाशितवाक्य 12:17; 13:1)। "अज़गर" शैतान को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 12:9)। "समुद्र" दुनिया के देशों को दर्शाता है (सीएफ. दानिय्येल 7:2-3)। और "पशु" अपने विभिन्न रूपों में मसीह विरोधी को दर्शाता है। मसीह विरोधी दुनिया के देशों से उभरेंगे और शैतान उन्हें अपनी शक्ति, अपना सिंहासन और अपना महान अधिकार देगा (प्रकाशितवाक्य 13:2)। परन्तु शैतान को "समुद्र के किनारे" पर एक ओर कर दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि अविश्वासी राष्ट्रों को प्रभावित करने की उसकी क्षमता पर कठोरता से अंकुश लगाया गया है।

इतिहास में गैर-मसीहियों (बहुवचन) ने नए नियम की लंबी अवधि के दौरान बाइबल के परमेश्वर की आराधना को रौंदा (चित्र: "वे मंदिर के बाहरी आँगन और पवित्र शहर को रौंदते हैं") (प्रकाशितवाक्य 11:2ख) और मसीह विरोधी लोग "परमेश्वर" होने का दावा करते हैं (प्रकाशितवाक्य 13:3-6,11-14क) और यहाँ तक कि दुनिया में एक संगठित साक्षी संस्थान के रूप में (प्रतीक: "दो गवाह") (प्रकाशितवाक्य 11:1-2क, 3; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 6:16) मसीही कलीसिया (प्रतीक: "परमेश्वर का मंदिर") पर आक्रमण करते हैं (प्रकाशितवाक्य 11:1)।

नए नियम की अवधि के दौरान शैतान अपने सहयोगियों के माध्यम से केवल अपने दुष्ट "दुनिया के राज्य" पर शासन करता है:

- "समुद्र से बाहर आता हुआ पशु" (मसीह विरोधी) *मसीहियों के विरुद्ध शैतान की राजनीतिक शक्तियों* को प्रदर्शित करता है (प्रकाशितवाक्य 13:1-10)
- "पृथ्वी से बाहर आता हुआ पशु" (या झूठा भविष्यद्वक्ता) *मसीहियों के विरुद्ध शैतान की धार्मिक शक्तियों* को प्रदर्शित करता है (प्रकाशितवाक्य 13:11-18)
- "महान वेश्या" (बाबुल) *मसीहियों के विरुद्ध शैतान की सांस्कृतिक और नैतिक शक्तियों* को प्रदर्शित करता है (प्रकाशितवाक्य 17:1-18)
- जो लोग "पशु का चिन्ह" प्राप्त करते हैं (या "गेहूं के बीच जंगली बीज") (मत्ती 13:38) वे *मसीहियों के विरुद्ध शैतान के अनुयायियों* को प्रदर्शित करते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:9)।

नए नियम की पूरी अवधि के दौरान "पूर्ण दुनिया (मसीही विरोधी) दुष्ट के नियंत्रण में हैं" (1 यूहन्ना 5:19), क्योंकि यीशु मसीह ("वह जो *अनंतकाल* के लिए परमेश्वर से जन्मा था") (यूनानी: गेजिनेमेनोस) (वर्तमान काल) उसको (मसीही "जो *हमेशा के लिए* परमेश्वर द्वारा जन्मा है) (यूनानी: जिनेथिस (अनिश्चितकाल समय) सुरक्षित रखता है और दुष्ट (शैतान) नुकसान नहीं पहुँचा सकता / मसीही को पकड़ नहीं सकता है (यूनानी: हाप्टोमाई) (वर्तमान काल) (1 यूहन्ना 5:18)!

दुनिया में नए नियम की लंबी अवधि के दौरान शत्रु (शैतान) "दुष्ट के पुत्रों को" दुनिया के मसीहियों के बीच (साथ में नहीं) बोता है (यूनानी: ऐना मेसोन टू सीटू) (मत्ती 24:25, 30, 41)। परमेश्वर का वर्तमान राज्य (या कलीसिया) इसलिए मिश्रित

है। इसलिए इस प्रकार वर्तमान कलीसिया में कई "नामधारी-मसीही" या "सांस्कृतिक-मसीही" हैं![41]

4. बहुत लंबी अवधि के अंत में शैतान को छोड़ दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:3ख, 7)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन से कुछ समय पहले, शैतान को उसकी "बन्धुआई" (अंकुश, नियंत्रित, सीमित) की स्थिति से मुक्त कर दिया जाएगा और वह मसीही कलीसिया के विरुद्ध "युद्ध (अंतिम)" के लिए दुष्ट दुनिया को इकट्ठा करेगा।

ङ. बहुत छोटी अवधि

आरम्भ। इस दुनिया के इतिहास के अंत में शैतान का "बन्धुआई" से मुक्त होना बहुत छोटी अवधि का आरम्भ है (तुलना करें मत्ती 24:22)। इस छोटी अवधि को "3½ दिन" द्वारा प्रतीकित किया गया है (प्रकाशितवाक्य 11:9, 11)। तब अंतिम मसीही विरोधी "दो गवाहों" (एक गवाही संस्थान के रूप में मसीही कलीसिया का प्रतीक) को नष्ट कर देगा। शैतान "राष्ट्रों" को धोखा देगा और उन्हें मानव इतिहास में अंतिम लड़ाई के लिए इकट्ठा करेगा (प्रकाशितवाक्य 20:7-8)। "राष्ट्र" उन सभी देशों के सभी लोगों के लिए एक प्रतीक है जो यीशु मसीह में विश्वास नहीं करते हैं (गैर-मसीही, अविश्वासी) (मत्ती 24:29)।

समय की इस बहुत ही छोटी अवधि के दौरान, निम्नलिखित घटनाएँ घटित होंगी:

- अंतिम मसीही विरोधी का शासनकाल
- अंतिम महाक्लेश
- अंतिम लड़ाई

इस छोटी अवधि का अंत मसीह का अचानक और अप्रत्याशित दूसरा आगमन, मृतकों का पुनरुत्थान (प्रकाशितवाक्य 11:11), विश्वासियों का मसीह से मिलने और उसका स्वागत करने के लिए हवा में उठाया जाना, उनके शत्रुओं द्वारा देखते हुए (प्रकाशितवाक्य 11:12), अंतिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 11:18; 14:6-12) और अपने अंतिम चरण में (नया आकाश और नई पृथ्वी) परमेश्वर के राज्य की स्थापना है (प्रकाशितवाक्य 11:18; 14:1-5; 21:1-2) जहाँ केवल धार्मिकता का वास होगा (2 पतरस 3:13)।

1. अंतिम मसीह विरोधी का शासनकाल (2 थिस्सलुनिकियों 2:1-12)

(1) अंतिम मसीह विरोधी को कौन रोके हुए है ?

यद्यपि पूरे विश्व इतिहास में कई मसीह विरोधी पैदा होते हैं (1 यूहन्ना 2:18; 4:3), एक अंतिम मसीह विरोधी (2 थिस्सलुनिकियों 2:3ख) होगा। लंबी अवधि के दौरान इस अंतिम मसीह विरोधी (नियम-विरुद्धी आदमी) का आना किसी "चीज़" या "व्यक्ति" द्वारा रोका जा रहा है (2 थिस्सलुनीकियों 2:6-8)। संभवत: यह दुनिया में "नियम" और "कानून और व्यवस्था चलाने वाले" का संदर्भ है।

जब दुनिया में कानून लागू नहीं होगा, तो अंतिम मसीह विरोधी (प्रतीक: रसातल से बाहर निकला पशु) दुनिया में एक संगठित गवाही संस्थान (प्रतीक: दो गवाह) के रूप में कलीसिया को नष्ट करने के लिए आएगा (प्रकाशितवाक्य 11:7))।

---

[41] "सांस्कृतिक-मसीही" स्वयं को "मसीही" कहते हैं क्योंकि उनके माता-पिता मसीही हैं या क्योंकि उनके देश को मसीही संस्कृति विरासत में मिली है, जैसे कई सांस्कृतिक हिंदू और सांस्कृतिक मुस्लमान हैं। किसी भी मामले में, उन्होंने नया जन्म प्राप्त नहीं किया हैं (यूहन्ना 3:7)!

(2) अंतिम मसीह विरोधी बाइबल के परमेश्वर का विरोध करेगा और स्वयं को प्रत्येक उस चीज़ से ऊँचा करेगा जिसे "भगवान" कहा जाता है या जिसकी पूजा की जाती है।

वह स्वयं को संगठित मसीही कलीसिया (प्रतीक: परमेश्वर का मंदिर) में स्थापित करेगा, स्वयं को परमेश्वर घोषित करेगा (2 थिस्सलुनिकियों 2:4; प्रकाशितवाक्य 13:14ख-15) और वहाँ अपने झूठ फैलाएगा (2 थिस्सलुनिकियों 2:9-12)। सच्चे मसीही उसका विरोध करते रहेंगे (याकूब 4:7) और उसकी उपासना करने और उसकी सेवा करने से इनकार कर देंगे। परन्तु इससे मसीहियों के विरुद्ध अंतिम महान क्लेश होगा और अंतिम लड़ाई होगी (पढ़ें प्रकाशितवाक्य 13:11-17)।

(3) मसीह विरोधी 3½ दिनों की प्रतीकात्मक अवधि के लिए अपनी बुरी शक्ति का प्रयोग करेगा।

संख्या "3½" शाब्दिक नहीं है, परन्तु बाइबल में बताई गई "बड़े उत्पीड़न की अवधि" को प्रदर्शित करती है (1 राजाओं 17:1; दानिय्येल 7:25; 9:27; 12:7; लूका 4:25; याकूब 5:17; प्रकाशितवाक्य 11:2-3,9,11; 12:6,14; 13:5)। संख्या 3½ से पता चलता है कि मसीह विरोधी उत्पीड़न की अवधि को ईश्वरीय संख्या 7 तक बढ़ाने का प्रयास करेगा, परन्तु आधे रास्ते (संख्या 3½) उसे अचानक और अप्रत्याशित रूप से रोक दिया जाएगा!

मसीह विरोधी उच्चतम संख्या 666 तक पहूँचने में सक्षम है (प्रकाशितवाक्य 13:18) (इसका प्रतीक है कि मसीह विरोधी "केवल एक आदमी है और पूरी तरह से परमेश्वर जैसा बनने में विफल होगा" (777)! उसके सभी प्रयास विफल हो जाएंगे!

2. मसीहियों का अंतिम महाक्लेश (मत्ती 24:21-26)

हालाँकि, पूरे इतिहास में मसीही संकट और क्लेशों का अनुभव करेंगे (यूहन्ना 16:33; 2 तीमुथियुस 3:12; प्रकाशितवाक्य 7:14), दुनिया के इतिहास के अंत में एक अंतिम महाक्लेश होगा (मत्ती 24:21-26; प्रकाशितवाक्य 3:10)।

(1) "अंतिम दिनों" की कुछ विशेषताएँ।

लोग सुरक्षा को हलके में लेंगे, लापरवाही से रहेंगे और भौतिकवाद की उपासना करेंगे (मत्ती 24:37-39)। लोग स्वयं के प्रेमी, धन के प्रेमी, बुराई के प्रेमी और परमेश्वर के प्रेमी होने के बजाय आनंद के प्रेमी होंगे। वे घमंडी, अभिमानी, हृदयहीन, न क्षमा करनेवाले, निंदक (अपमानजनक), बिना आत्म-नियंत्रण और क्रूर होंगे। वे विश्वासघाती, उतावले और अहंकारी होंगे (2 तीमुथियुस 3:1-5)। नाममात्र मसीही यीशु मसीह में अपने विश्वास का त्याग करेंगे और दुष्ट आत्माओं द्वारा पाखंडी झूठे लोगों के माध्यम से सिखाई गई चीजों और धोखा देनेवाली आत्माओं का पालन करेंगे (1 तीमुथियुस 4:1-2)। कई नामधारी मसीही अपने मसीही विश्वास से दूर हो जाएंगे (2 थिस्सलुनीकियों 2:3क)।

(2) अंतिम मसीह विरोधी दुनिया और कलीसिया को जीत लेगा।

परमेश्वर सभी देशों और सभी लोगों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए अंतिम मसीह विरोधी को अनुमति दे देगा। परमेश्वर उसे मसीहियों के विरुद्ध युद्ध करने और एक विशेष अर्थ में उन्हें "जितने" की अनुमति भी देगा (प्रकाशितवाक्य 11:7; 13:7-8; तुलना करें अय्यूब अध्याय 1-2)। यह संभवतः एक संगठित साक्षी संस्थान के रूप में मसीही कलीसिया के विनाश (दिखने वाली कलीसियाएँ और अन्य मसीही संगठनों के विनाश) को संदर्भित करता है। यह पृथ्वी पर प्रत्येक

मसीही के विनाश का उल्लेख नहीं करता है। मसीह के दूसरे आगमन पर पृथ्वी पर मसीही होंगे!

(3) मसीही महाक्लेश से होकर निकलेंगे।

यीशु मसीह (मत्ती 24:3-31) और प्रेरित पौलुस (2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; 2:1-8), पतरस (2 पतरस 3:3-13; तुलना करें 1 पतरस 1:6-7); और यूहन्ना (प्रकाशितवाक्य 13:5-10,15-18; 14:14-19) सर्वसम्मति से सिखाते हैं कि यीशु मसीह के एक और केवल एक दूसरे आगमन से पहले अंतिम समय में रहने वाले सभी मसीहियों को अवश्य अंतिम महाक्लेश से होकर जाना होगा! तब कुछ भी ऐसा नहीं होने वाला जो "कलीसिया का गुप्त स्वर्गारोहण" कहलाता है, जो कि महाक्लेश से पहले पृथ्वी से सभी मसीहियों को हटा देगा!

"उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा" (मत्ती 24:21)। झूठे मसीह (मसीहा) और अन्य धर्मों के झूठे भविष्यद्वक्ता प्रकट होंगे, मसीहियों को परखने और धोखा देने के लिए महान चिन्ह और चमत्कार करेंगे (मत्ती 24:24क)!

(4) परन्तु वास्तविक मसीहियों को डरने की आवश्यकता नहीं है!

वास्तविक मसीहियों को धोखा देना असंभव है (मत्ती 24:24ख)! मसीही इस दुष्ट दुनिया पर जयवंत होंगे क्योंकि उन्होंने नया जन्म पाया है और वे विश्वास करते हैं (1 यूहन्ना 5:4; प्रकाशितवाक्य 17:14)। प्रभु ने वादा किया: "मैं तुम्हें न कभी छोड़ूंगा; न मैं तुम्हें कभी त्यागूँगा।" इसलिए हम विश्वास के साथ कह सकते हैं, "प्रभु मेरा सहायक है; मैं नहीं डरूँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?"(इब्रानियों 13:5-6) मसीही अंत तक दृढ़ रहेंगे (मत्ती 24:13; रोमियों 11:20; 14:4)! परमेश्वर, जिसने उनमें एक अच्छा काम आरम्भ किया, वह उसे करता रहेगा और मसीह के दूसरे आगमन पर उसे पूर्ण रीति से पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)! कोई भी और कुछ भी वास्तविक मसीहियों को यीशु मसीह के हाथ से नहीं छीन सकता (यूहन्ना 10:28-30)! यीशु मसीह एक भी वास्तविक मसीही को नहीं खोएगा (यूहन्ना 18:9)! कोई भी और कुछ भी उन्हें उनके लिए परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता (रोमियों 8:37-39)! परन्तु "नामधारी-मसीही" या "सांस्कृतिक-मसीही" नया जन्म नहीं पाएँगे (तुलना करें यूहन्ना 3:3-8) और "मसीही विश्वास से पीछे हट जाएँगे या दूर हो जाएँगे" (एनआईवी: विद्रोही) (यूनानी: अपोस्टेसिस) (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)।

(5) महाक्लेश की अवधि की लंबाई।

क्लेश की अवधि 3½ वर्ष की शाब्दिक अवधि तक नहीं रहेगी, क्योंकि संख्या "3½ दिन" (प्रकाशितवाक्य 11:9-12) इसकी लंबाई को निर्दिष्ट किए बिना "क्लेश की अवधि" का *प्रतीकत्व (प्रदर्शित)* करती है। फिर भी, यीशु सिखाता है कि क्लेश की अवधि "चुनों हुओं के कारण कम कर दी जाएगी" (न्य-जन्म पाए मसीही) (मत्ती 24:22)!

3. मसीहियों के विरुद्ध अंतिम लड़ाई

इस छोटी अवधि (महाक्लेश) के अंत में, शैतान (गैर-मसीही) राष्ट्रों को धोखा देने के लिए और मसीहियों (प्रतीक: "संतों") के विरुद्ध अंतिम लड़ाई हेतु उन्हें इकट्ठा करने के लिए (प्रकाशितवाक्य 20:7-9क) पूरी पृथ्वी की चार पवन दिशाओं (प्रतीक: "पृथ्वी के चार कोने") में जाएगा।

अंतिम लड़ाई को अन्य बाइबल पद्यों में भी दर्शाया गया है (प्रकाशितवाक्य 16:12-16; 17:14; 19:17-19)। बाइबल

विशिष्ट राष्ट्रों को नाम से संदर्भित नहीं करती है, क्योंकि "गोग और मगोग" (तुलना करें यहेजकेल 38:2,15-16; यहेजकेल 19:17) "सभी देशों के अविश्वासियों" के प्रतीक हैं, जो पुराने नियम के प्रकाशन के दौरान भी परमेश्वर के लोगों (मसीह और मसीहियों) के शत्रु बन गए थे (यशायाह 24:21; मत्ती 24:9; प्रकाशितवाक्य 19:18)।
यीशु मसीह का दूसरा आगमन इस अंतिम लड़ाई और महाक्लेश की अवधि को समाप्त करता है (प्रकाशितवाक्य 19:11-16, 20-21; 20:9ख-10)।

च. यीशु का अचानक से प्रकट होना

1. यीशु मसीह का केवल एक दूसरा आगमन होने वाला है (मत्ती 24:27-31)

(1) शब्द: "आगमन" और "प्रकट"।

यीशु और पौलुस दोनों ने "आगमन" (यूनानी: परुसिआ) (मत्ती 24:39; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1) और "प्रकट" (यूनानी: अपोकालुप्सिस) (लूका 17:30 ; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7) शब्दों का उपयोग एक ही घटना के लिए किया है!

(2) दृष्टान्तों में दूसरा आगमन ।

दृष्टांतों में (मत्ती 13:36-43; 25:10-13; 25:19) और बाइबल के सभी शिक्षण पद्यों में (मत्ती 16:27; 24:30-31; 25:31-32) यीशु मसीह का दूसरा आगमन एक एकल और सब-सम्मिलित (सब- एकत्रित) घटना है!

2. मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा, सभी लोगों के लिए बहुत ही दिखने और सुनने योग्य होगा।

(1) मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा।

यह "रात में चोर के रूप में" होगा (1 थिस्सलुनीकियों 5:1-2; प्रेरितों 1:7)। कोई भी व्यक्ति उस दिन या समय का अनुमान नहीं लगा सकता है (मत्ती 24:36, 42)। जब मसीह लौटेगा तो अविश्वासी तैयार नहीं होंगे (मत्ती 24:37-41)। मसीहियों को तैयार होना चाहिए। फिर भी, मसीह तब वापस आएगा जब मसीही भी इसकी अपेक्षा नहीं करते होंगे (मत्ती 24:43-44)!

(2) मसीह का दूसरा आगमन अच्छे से दिखने योग्य होगा।

यह बिजली के समान होगा जो पृथ्वी पर पूर्व से पश्चिम तक दिखाई देती है (मत्ती 24:27-28)। पृथ्वी पर सभी लोग यीशु मसीह को आकाश के बादलों पर आता हुआ देखेंगे (मत्ती 24:30; प्रकाशितवाक्य 1:7)।

(3) मसीह का दूसरा आगमन अच्छे से सुनने योग्य होगा।

वह तुरही की एक जोरदार ध्वनी के समान होगा। पृथ्वी पर सभी लोग मसीह की ऊँची आज्ञा और प्रधान स्वर्गदूत की तुरही की ध्वनी को सुनेंगे (मत्ती 24:31; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16) जो सभी मृतकों को जगाएगी (यूहन्ना 5:28)। हर कोई उसी क्षण जान जाएगा कि यीशु मसीह कौन है।

(4) मसीह का दूसरा आगमन बड़े चिन्हों के साथ होगा।

मसीह शैतान और उसके सहयोगियों को अपनी मुँह की फूँक मारकर, अपने आगमन के वैभव के साथ उन्हें नष्ट करके (2

थिस्सलुनीकियों 2:8) और उन्हें स्वर्ग की आग से भस्म करके (प्रकाशितवाक्य 20:9ख) मसीहियों के विरुद्ध उनकी अंतिम लड़ाई को समाप्त कर देगा। वह उन सभी को नरक में फेंक देगा (प्रकाशितवाक्य 19:20-21; 20:9ख-10)।

एक बड़ा भूकंप होगा जो पहाड़ों, द्वीपों और आकाश को हटा देगा। ब्रह्मांड में पिंड जाते रहेंगे। इस प्रकार पुरानी सृष्टि सब कुछ के नवीकरण के लिए रास्ता बना देगी (मत्ती 24:29; इब्रानियों 1:10-12; प्रकाशितवाक्य 6:12-17; 16:17-21; 20:11; 21:1)!

इस प्रकार, उसके दूसरे आगमन पर तथाकथित दूसरी वापसी से पहले मसीह की कोई तथाकथित पहली गुप्त वापसी (कलीसिया का एक गुप्त रीति से उठाया जाना) नहीं होगी (जैसा कि डिस्पेंसेशनलिस्ट सिखाते हैं)!

3. मसीह के दूसरे आगमन के एक और केवल एक दिन में पाँच महत्वपूर्ण घटनाएँ होंगी:

- उन सभी का पुनरुत्थान जो पहले ही मर चुके थे
- जीवित मसीहियों का रूपांतरण
- सभी विश्वासियों द्वारा यीशु मसीह का स्वागत
- सभी लोगों का अंतिम न्याय
- सभी चीजों का नवीनीकरण

छ. पहली घटना

उन सभी का पुनरुत्थान जो पहले ही मर चुके थे

1. यीशु मसीह पहला है जो मरे हुओं में से ज़िंदा किया गया है।

उद्धार के इतिहास में कई लोगों को मृतकों से ज़िंदा किया गया था (2 राजा 4:32-35; मत्ती 11:5; लूका 7:14-15; लूका 8:53-55; यूहन्ना 11:38-44; मत्ती 27:51-53; प्रेरितों 9:36-42; प्रेरितों 20:8-11), परन्तु वे बाद में फिर से मर गए! प्रभु यीशु मसीह वह एकमात्र था जिसे एक अविनाशी और महिमामय शरीर के साथ मृतकों में से पुनर्जीवित किया गया था। इसीलिए यीशु मसीह को "मृतकों का पहिलौठा" कहा जाता है (कुलुस्सियों 1:18)। “और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे। परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से; पहिला फल मसीह (2000 वर्ष पहले); फिर मसीह के आने पर उसके लोग। इस के बाद अन्त होगा ... ”(1 कुरिन्थियों 15:22-24क)।

2. यूहन्ना रचित सुसमाचार में पहला और दूसरा पुनरुत्थान ।

यीशु ने यूहन्ना रचित सुसमाचार में दो पुनरुत्थान की बात की है:

मसीहियों का **पहला पुनरुत्थान** उनकी *मानवीय आत्मा* का पुनर्जनन होता है, जब भी वे सुसमाचार को मानते हैं। यह पूरे नए नियम की अवधि के दौरान हुआ है। "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे,

और जो सुनेंगे वे जीएंगे" (यूहन्ना 5:24-25)। उनकी मृत आत्मा (प्राण) (इफिसियों 2:1) को जीवित बना दिया जाता है (इफिसियों 2:5), अर्थात, नया जन्म (यूहन्ना 33:3-8)।

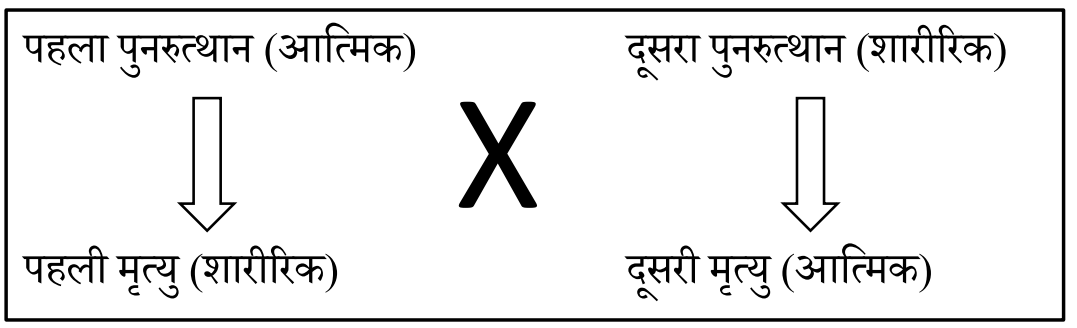
मसीहियों का **दूसरा पुनरुत्थान** यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर उनके *मानव शरीर* का पुनरुत्थान है। "वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे" (यूहन्ना 5:28-29) । यूहन्ना 5:28-29 यीशु के दूसरे आगमन पर सभी लोगों के शरीर के पुनरुत्थान और अंतिम न्याय की बात करता है। आत्मिक पुनरुत्थान और शारीरिक पुनरुत्थान दोनों ही शाब्दिक और वास्तविक घटनाएँ हैं!

3. प्रकाशितवाक्य में पहला और दूसरा पुनरुत्थान ।

उसी प्रकार से, यीशु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में "पहले पुनरुत्थान" (मसीहियों का) और "दूसरी मृत्यु" (गैर-मसीहियों की) के विषय में बोलता है (प्रकाशितवाक्य 20:4-6) और इस रीति उसका "पहली मृत्यु" (सभी लोगों की) और "दूसरा पुनरुत्थान" (सभी लोगों का) से तात्पर्य था।

बाइबल मृतकों से दो शारीरिक पुनरुत्थान नहीं सिखाती है, परन्तु मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों का केवल एक पुनरुत्थान (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15; प्रकाशितवाक्य 20:12-13)।

प्रकाशितवाक्य 20:4-6 एक अलंकार (केइसमस)[42] है!



"पहला पुनरुत्थान" और "दूसरी मृत्यु" शाब्दिक वास्तविक घटनाओं (आत्मिक अनंत जीवन और आत्मिक अनंत मृत्यु) के लिए *प्रतीकात्मक / आलंकारिक अभिव्यक्ति* हैं! "पहली मृत्यु" और "दूसरा पुनरुत्थान" इसी प्रकार शाब्दिक वास्तविक घटनाओं (अस्थायी शारीरिक मृत्यु और अनंत शारीरिक पुनरुत्थान) के लिए *शाब्दिक अभिव्यक्ति* हैं!

- मसीह के दूसरे आगमन से पहले *केवल मसीहियों* को स्वर्ग में स्थानांतरित किया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:4-6; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 6:9-11; इब्रानियों 12:22-23)।
- मसीह के दूसरे आगमन के बाद *केवल गैर-मसीहियों* को नरक में डाल दिया जाएगा (मत्ती 25:46)।

पहली मृत्यु (का तात्पर्य) केवल (मसीही) और गैर-मसीही दोनों की शारीरिक मृत्यु को संदर्भित करती है, जब वे मर जाते हैं और उनकी मानवीय आत्माएँ उनके मानव शरीर से अलग हो जाती हैं (सभोपदेशक 12:7)। "मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते" (1 कुरिन्थियों 15:50)। इसीलिए वर्तमान नाशवान शरीर को मरना होगा!

[42] केइसमस । दूसरा वाक्यांश पहले वाक्यांश का उल्टा क्रम है।

पहला पुनरुत्थान एक शाब्दिक घटना के लिए एक आलंकारिक अभिव्यक्ति है, यानी, शरीर का पुनरुत्थान नहीं, बल्कि *केवल (मात्र) मसीही की आत्मा (प्राण) (यूनानी: पसुचे) के पुनरुत्थान के लिए* (प्रकाशितवाक्य 20:4), अर्थात्, स्वर्ग में परमेश्वर / मसीह की उपस्थिति में पृथ्वी पर मरने वाले व्यक्ति की आत्मा का स्थानांतरण (तुलना करें लूका 16:22; लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 5:1, 8; फिलिप्पियों1:23; प्रकाशितवाक्य 20:4) यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच की पूरी अवधि के दौरान।

1000 वर्षों की प्रतीकात्मक अवधि के दौरान, जब मसीही मरते हैं, "*वे एक बार हमेशा के लिए जी लिए*" (मसीह की उपस्थिति में) । (यूनानी: एज़ेसन <ज़ाओ)। यूनानी शब्द "एज़ेसन" (अनिश्चित काल) का अर्थ है: "वे एक बार सारे समय के लिए जीते हैं", (एनआईवी के बजाय: वे जीवन में आए) (जो बहुत अधिक शारीरिक पुनरुत्थान के रूप में दिखता है)। यह स्वर्ग की आत्मिक वास्तविकता में अद्वितीय आत्मिक पुनरुत्थान / स्थानांतरण का संदर्भ है, उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद स्वर्गीय महिमा में उनके शाब्दिक आत्मिक जीवन का संदर्भ (सभोपदेशक12:7; तुलना करें लूका 16:22; लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 5:1,8; फिलिप्पियों1:23; कुलुस्सियों 3:3-4; 1 थिस्सलुनिकियों 4:14; 1 थिस्सलुनिकियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 14:13; प्रकाशितवाक्य 20:4)। इसे "*पहला पुनरुत्थान*" कहा जाता है। यह भौतिक पुनरुत्थान नहीं है, बल्कि आत्मिक पुनरुत्थान है।

गैर-मसीहियों की आत्माएँ "जीवित नहीं" (एनआईवी के बजाय: जीवन में नहीं आईं) (यानी मसीह की उपस्थिति में नहीं आईं), जब तक कि 1000 वर्ष समाप्त नहीं हुए (यूनानी: ऊक एज़ेसान अकरी टेलेस्ते ता चिलिआ एते)। उन्हें स्वर्ग में स्थानांतरित नहीं किया जाता है, परन्तु दूसरे आगमन तक नरक में रहेंगी, जब वे अंतिम न्याय में मसीह के सामने खड़ी होंगी (तुलना करें मरकुस 8:34-38; मरकुस 9:43-48; लूका 16:23; 2 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 20:5 और मत्ती 25:31-33)।

यूनानी शब्द "एज़ेसान" (अनिश्चित काल) का अर्थ है: "*वे एक बार हमेशा के लिए जिए*", उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद स्वर्गीय महिमा में उनके शाब्दिक आत्मिक जीवन का संदर्भ। उनकी मानव आत्मा / प्राण मृत शरीर से स्वर्ग में "स्थानांतरित" हो जाती है (सभोपदेशक 12:7)!

यूनानी शब्द "लीव" का एक ही अर्थ है:

- लूका 20:37-38. **मसीह के पहले आगमन से पहले जीना** । अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर (शारीरिक) मृतकों का परमेश्वर नहीं है (यूनानी: नेक्रोन), परन्तु (आत्मिक रूप से) जीवितों का है (यूनानी: ज़ोनटोन <ज़ाओ) (कृदंत, वर्तमान काल, सक्रिय) । परमेश्वर के विचार में, कलीसिया के आत्मिक पिता “जीवित” हैं (यूनानी: ज़ोसिन <ज़ाओ) (वर्तमान काल) ।

- यूहन्ना 11:25. **मसीह के पहले आगमन के बाद जीना** । भले ही उसे (शारीरिक रूप से) एक बार मरना है (अनिश्चित काल), वह (उसकी आत्मा) निश्चित रूप से "जीएगी" (यूनानी: ज़ोसेताई <ज़ाओ) (भविष्य काल) ।

- 1 थिस्सलुनिकियों 5:10. **मसीह के दूसरे आगमन पर ज़िन्दा होना** । "चाहे हम जाग रहे हैं (अभी भी जीवित हैं) (उसके दूसरे आगमन पर) या (हमारे शरीर) सो रहे हैं (मृत्यु में) (यूनानी: काथिउडो), हम (हमारी आत्माएँ और शरीर)"

जीएंगे "(यूनानी: ज़ोसोमन <ज़ाओ) (अनिश्चित काल) मिलकर (यूनानी: हमा सुन) मसीह के साथ।"

दूसरा पुनरुत्थान (तात्पर्य) *मसीही और गैर-मसीही दोनों के शरीर के (एकल) शारीरिक पुनरुत्थान को* संदर्भित करता है, साथ ही साथ (एक और केवल) मसीह के दूसरे आगमन पर (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों24:15; प्रकाशितवाक्य 20:12a,13-14)। "क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान (शरीर) अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार (शरीर) अमरता को पहिन ले" (1 कुरिन्थियों 15:53)। मसीह में मारे गए मसीहियों की (आत्माएँ) यीशु के दूसरे आगमन पर उसके साथ लाई जाएंगी (1 थिस्सलुनीकियों 4:14)। और (मृतकों के शरीर) जो मसीह में सो गए हैं, पहले उठेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। तब महिमामय मानव आत्मा (1 यूहन्ना 3:2) को एक अविनाशी एकता में महिमामय मानव शरीर के साथ फिर से एकीकृत किया जाएगा (फिलिप्पियों 3:21)। पुनर्जीवित मसीही "एक जीवन देने वाली आत्मा" होगा जो पुनरुत्थान किए गए मसीह की उसी परिपूर्ण समानता को लिए हुए होगा। इसका अर्थ यह है कि मसीही पूरी रीति से और सिद्धता से पवित्र आत्मा के नेतृत्व में होंगे और पवित्र आत्मा के चलाए चलेंगे (1 कुरिन्थियों 15:45-50 तुलना करें गलातियों 5:16,18, 25)। परमेश्वर इस महिमामय भविष्य के लिए मसीहियों को वर्तमान समय में पवित्र आत्मा देकर एक जमा राशि के रूप में तैयार कर रहा है जो आश्वासन देता है कि यह रूपान्तरण निश्चित रूप से होगा (2 कुरिन्थियों 1:22; 2 कुरिन्थियों 5:5)! आत्मिक पुनरुत्थान और शारीरिक पुनरुत्थान दोनों ही वास्तविक घटनाएँ हैं! मसीह के दूसरे आगमन के बाद और कोई पाप नहीं होगा (1 कुरिन्थियों 15:56-57), कोई मृत्यु या शोक या रोना या पीड़ा नहीं होगी, क्योंकि चीज़ों का पुराना क्रम जाता रहेगा (प्रकाशितवाक्य 21:4)!

दूसरी मृत्यु एक शाब्दिक घटना के लिए एक आलंकारिक अभिव्यक्ति है। यह शारीरिक मृत्यु को संदर्भित नहीं करती है (क्योंकि वह पहले से ही अतीत में हो चुकी है), परन्तु *केवल गैर-मसीही की आत्मा और शरीर की (एकल) अनंत मृत्यु*, अर्थात् अविश्वासी और अनाज्ञाकारक (अपवित्र और अधर्मी) की आत्मा (प्राण) और शरीर का नरक में स्थानांतरण (प्रतीक: जलती हुई गंधक की उग्र झील में अविश्वासी का फेंका जाना) (मत्ती 10:28; प्रकाशितवाक्य 2:11; प्रकाशितवाक्य 20:6,4; प्रकाशितवाक्य 21:8) अंतिम न्याय के दिन।

जबकि प्रकाशितवाक्य 20:4-6 मसीही और गैर-मसीही दोनों के पुनरुत्थान के विषय में बात करता है, 1 थिस्सलुनीकियों 4 और 1 कुरिन्थियों 15 केवल मसीहियों के पुनरुत्थान के विषय में बोलते हैं और गैर-मसीहियों के पुनरुत्थान के विषय में नहीं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीहियों के साथ गैर-मसीहियों को एक साथ (एक ही समय पर) पुनर्जीवित नहीं किया जाएगा (यूहन्ना 5:28-29)।

ज. दूसरी घटना
जीवित मसीहियों का रूपांतरण

यीशु मसीह के लौटने पर वे मसीही जो उस समय जीवित होंगे, उनके नश्वर शरीर (1 कुरिन्थियों 15:51-53) और असिद्ध आत्माएँ (तुलना करें रोमियों 8:29; इफिसियों 1:4) एक क्षण में बदल जाएंगे, पलक झपकते ही। "यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले" (1 कुरिन्थियों 15:51-53)।

झ. तीसरी घटना

सभी विश्वासियों द्वारा यीशु मसीह का स्वागत

1. पुनरुत्थान के बाद केवल मसीहियों को यीशु मसीह से मिलने और स्वागत करने के लिए आकाश में उठाया जाएगा (मत्ती 24:31,40क, 41क; तुलना करें लूका 16:22)।

सभी को दूसरे आगमन का अनुभव होगा। हालाँकि मसीही और गैर-मसीही एक साथ पुनर्जीवित होंगे (यूहन्ना 5:28-29), स्वर्गदूत सबसे पहले चुने हुओं (यानी सभी वास्तविक मसीही) को इकट्ठा करेंगे, प्रभु यीशु मसीह से मिलने और उसका हवा में स्वागत करने के लिए (मत्ती 24:40क,41क; तुलना करें 1 थिस्सलुनिकियों 4:17; 2 थिस्सलुनिकियों 1:10)।

स्वर्गारोहण । स्वर्गदूत पुनर्जीवित और परिवर्तित मसीहियों को यीशु मसीह से बादलों पर एक साथ हवा में (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17) मिलने के लिए (यूनानी: ईस अपानटेसीन) "**छीन लेंगे**" (प्रकाशितवाक्य 12:5) या "**पकड़ लेंगे / ले लेंगे**" (1 थिस्सलुनीकियों 4:17) (यूनानी: हार्पाज़ो)। शब्द "छीन लेंगे" (यूनानी: हार्पाज़ो) (भविष्य काल) का अर्थ है "बल के साथ छीनना" (यूहन्ना 6:15; यूहन्ना 10:28; यहूदा 1:23; प्रकाशितवाक्य 12:5)। मसीहियों को स्वर्गदूतों के साथ "(यूनानी: पारालमबानोमाई) ले जाया जाएगा (मत्ती 24:31,40क-41क)। यह तथाकथित "कलीसिया या सभी नया जन्म लिए मसीहियों का उठाया जाना" है, जो कि मसीही के दूसरे आगमन से 3½ या 7 वर्ष पहले नहीं होगा, परन्तु मसीह के दूसरे आगमन पर होगा! इन सभी मसीहियों को "भेड़" (मत्ती 25:33), "उसकी गेहूँ" (मत्ती 3:12), "अच्छा बीज", "राज्य के बच्चे" या "धर्मी" कहा जाता है (मत्ती 13:36-43)। इस प्रकार, केवल पुनर्जीवित और रूपांतरित मसीही यीशु के दूसरे आगमन पर उसका हवा में स्वागत करेंगे!

"मिलने के लिए" अभिव्यक्ति (यूनानी: ईस अपानटेसिन)। यह लोगों के अपने घर को छोड़ने और एक महत्वपूर्ण व्यक्ति से मिलने और उसका स्वागत करने के लिए और फिर उनके साथ अपने घर लौटने के रिवाज़ को संदर्भित करता है (देखें प्रेरितों 28:15; मत्ती 25:10)।

मत्ती 25:6 कहता है, "आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है! उस से भेंट करने के लिये चलो!" (यूनानी: इडो हो नुमफियोस, एक्सेरचेस्ते ईस एपेंटेसिन ऑटू)। पद्य 10 कहता है: "जब वे तेल मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहूँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चलीं गई और द्वार बन्द किया गया।" शब्द: "ईस एपंटेसिन" यीशु मसीह के दूसरे आगमन का उल्लेख करता है जो अचानक और अप्रत्याशित रूप से आएगा और ऐसे लोगों से मिलने जो उससे मिलने के लिए बाहर निकले हैं और उनसे जिन्होंने उससे मिलने में भाग नहीं लिया (देखें मत्ती 24:40-41) और शादी के भोज में भी हिस्सा नहीं लिया।

प्रेरितों 28:15 में शब्द "ईस एपंटेसिन" रोम में विश्वासियों के लिए उपयोग किया गया है, जो रोम में वापिस आने से पहले पौलुस से मिलने और उसका स्वागत करने के लिए रोम से बाहर गए थे।

1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17 में शब्द "ईस एपेंटेसिन" उन सभी मसीहियों के लिए उपयोग किए गए हैं जिन्हें यीशु के दूसरे आगमन पर उससे हवा में मिलने, स्वागत करने, महिमा करने और उस पर अचंभा करने के लिए पुरानी पृथ्वी से

छीन लिया गया था (उठा लिया गया) (यूनानी: हार्पाज़ो) (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10) और इस अंतिम न्याय के दिन आंके जाने के लिए (मत्ती 25:31-33), साथ ही साथ इस पुरानी पृथ्वी के न्याय के साथ (मत्ती 24:29-31; रोमियों 8:19-23; 2 पतरस 3:10-13; देखें प्रकाशितवाक्य 6:12-17; 16:17-21; 20:11) इससे पहले कि वे यीशु मसीह के साथ (नए यरुशलेम के रूप में) मिलकर नई पृथ्वी पर उतरे (प्रकाशितवाक्य 21:1-2) मसीह के साथ हमेशा रहने के लिए (1 थिस्सलुनीकियों 4:18; 5:10; प्रकाशितवाक्य 21:3-5)!

महिमा और अचम्भा करना। यीशु मसीह हमेशा के लिए संतों में (परमेश्वर द्वारा अलग रखे गए) महिमावान होगा (यूनानी: एंडोक्साज़ोमाई) (अनिश्चित काल निष्क्रिय)। वे पूरी रीति से मसीह की विशेषताओं को प्रतिबिंबित करेंगे (देखें 2 कुरिन्थियों 3:18)। वह "तेरे कारण आनन्द से मगन होगा ... वह ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा" (सपन्याह 3:17; यशायाह 49:3 देखें)। परमेश्वर स्वयं को यीशु मसीह में उसके देह धारण, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन प्राप्ति में महिमावान करेगा (इब्रानी: पे'आर हिप्न) (यशायाह 44:23; 49:3; प्रकाशितवाक्य 5:1-14) और "स्वयं को फिर से महिमावान" करेगा (यूनानी: पालिन डोक्साओ) (भविष्य काल) (यूहन्ना 12:20) यीशु मसीह में उसके दूसरे आगमन पर! यीशु मसीह *एक बार फिर से* सभी लोगों को आश्चर्यचकित कर देगा (यूनानी: थाउमाज़ो) (अनिश्चित काल निष्क्रिय) जो लोग विश्वास करते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)! वे उसकी प्रशंसा करेंगे। अंतिम न्याय के बाद केवल वे ही मसीह के साथ मिलकर नई पृथ्वी पर लौटेंगे!

2. बाद में उसी दिन गैर-मसीही अंतिम न्याय के लिए मसीह के सिंहासन के सामने एकत्रित किए जाएँगे (मत्ती 24:40ख, 41ख)।

सभी अविश्वासियों और गैर-मसीहियों को "पीछे छोड़ दिया जाएगा" (देखें मत्ती 24:40ख, 41ख) ताकि पहले आकाशीय पिंडों में हिंसक परिवर्तन को अनुभव करें / देखें (प्रकाशितवाक्य 6:12-17)। मसीह के स्वागत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा। बाद में दूसरे आगमन के दिन स्वर्गदूत उन्हें एक और अंतिम न्याय के लिए हवा में मसीह के न्याय के आसन के सामने एकत्रित करेंगे (मत्ती 24:40ख, 41ख; देखें मत्ती 25:31-33; प्रकाशितवाक्य 20:11-12)! उन्हें उग्र आग भट्टी में फेंक दिया जाएगा (मत्ती 13:40-42,48; मत्ती 25: 32-33)। अविश्वासियों और गैर-मसीहियों को "बकरियाँ" (मत्ती 25:33), "भूसी" (मत्ती 3:12), "जंगली दाने", "दुष्टों की संतान" या "पाप करने वाले लोग और जो बुराई करते हैं" कहा गया है (मत्ती 13:36-43)।

ञ. चौथी घटना
सभी लोगों का अंतिम न्याय

1. बाइबल केवल एक अंतिम न्याय के विषय में सिखाती है।

(1) हवा में केवल एक अंतिम न्याय।

यीशु मसीह के एकल और एक दूसरे आगमन पर मृतकों में से केवल एक पुनरुत्थान होगा (प्रेरित 24:33; यूहन्ना 5:28-29)। इसके तुरंत बाद उन सभी लोगों का एकल और एक अंतिम न्याय होगा जो कभी इतिहास में रहते थे (मत्ती 3:12; 13:30, 40-43; 19:28; 24:39-42; 25:31-46; लूका 17:30, 34-35)।

"सिंहासन" के लिए निम्नलिखित तीन शब्द एक और एक ही अंतिम न्याय दिन का संदर्भ देते हैं!

- "मसीह के न्याय आसन" के सामने विश्वासियों और अविश्वासियों का अंतिम न्याय (2 कुरिन्थियों 5:10)
- "मसीह के महिमामय सिंहासन" के सामने सभी राष्ट्रों (इस्राएल सहित) का न्याय (मत्ती 19:28; 25:25-7)
- "महान श्वेत सिंहासन" के सामने सभी पुनर्जीवित मृतकों का न्याय (प्रकाशितवाक्य 20:11-12)

जैसे यीशु मसीह के लिए विभिन्न अलग-अलग नाम अलग-अलग व्यक्तियों को संदर्भित नहीं करते हैं, उसी प्रकार अंतिम न्याय के लिए विभिन्न अलग-अलग नाम कई अलग-अलग न्यायों को संदर्भित नहीं करते हैं।

बाइबल में "सिंहासन" को ऊपरी क्षेत्रों में दर्शाया गया है (1 राजा 22:19; दानिय्येल 7:9-10; प्रकाशितवाक्य 4:2; 20:4; तुलना करें "हवा" 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 में)।

(2) लोगों का उसके अनुसार अंतिम न्याय जो उन्होंने किया है।

अंतिम न्याय के दिन तक मसीही और गैर-मसीही एक दूसरे के बीच मिश्रित रहेंगे (मत्ती 13:30)। परन्तु अंतिम न्याय के दिन मसीहियों को गैर-मसीहियों से अलग कर दिया जाएगा (मत्ती 13:41-43; 25:32)।

हवा में यीशु मसीह के न्याय सिंहासन के सामने स्वर्गदूतों द्वारा सभी लोगों को इकट्ठा करने के बाद, यीशु मसीह अंतिम बात बोलेगा (यूहन्ना 5:22, 27)। वह सार्वजनिक रूप से सब कुछ प्रकट करेगा जो मसीही और गैर-मसीहियों ने किया है (सभोपदेशक 12:14; रोमियों 2:5-8)। सभी को उसे अपना लेखा देना होगा (इब्रानियों 4:13; तुलना करें मत्ती 10:26) चाहे वह यीशु मसीह से संबंधित हो या नहीं और चाहे वह उसके वचन का पालन करता है या नहीं। "तब वे (बकरियाँ) अनंत दण्ड के लिए चली जाएँगी, परन्तु अन्य (भेड़ें) अनन्त जीवन में जाएँगी" (मत्ती 25:46)।

जिनके नाम जीवन की पुस्तक में दर्ज किए गए हैं, केवल वे परमेश्वर के राज्य के अपने अंतिम चरण (नई पृथ्वी) को विरासत में प्राप्त करेंगे (मत्ती 25:34; प्रकाशितवाक्य 20:12,15)।

2. गैर-मसीहियों को सार्वजनिक रूप से दोषी ठहराया जाएगा।

(1) शारीरिक मृत्यु से पहले उन्हें व्यक्तिगत रूप से दोषी ठहराया जाता है।

जो लोग यीशु मसीह में विश्वास नहीं करते हैं (गैर-मसीही और अविश्वासी), उन्हें अंतिम न्याय के दिन सजा नहीं सुनाई जाएगी, क्योंकि बाइबल कहती है कि पृथ्वी पर मरने से पहले ही उन्हें दोषी ठहरा दिया गया है! उन्हें निम्नलिखित के लिए दोषी ठहराया गया (विनाश के लिए) है:

- उनका अविश्वास (यूहन्ना 3:18, 36; तुलना करें रोमियों 8:1)
- सही तरीके से जीने की उनकी उपेक्षा (मत्ती 25:41-46)
- अधर्मी कर्म जो उन्होंने किए हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:6, 8; प्रकाशितवाक्य 21:8)।

मसीह के दूसरे आगमन पर, यहाँ तक कि गैर-मसीही भी स्वयं का समर्पण करेंगे ("अपने घुटनों पर आएँगे") और स्वीकार करेंगे कि यीशु मसीह वास्तव में प्रभु था (फिलिप्पियों 2:11)! परन्तु तब उनके लिए बहुत देर हो जाएगी!

(2) उनके शारीरिक पुनरुत्थान के बाद सार्वजनिक रूप से उन्हें दोषी ठहराया जाता है।

उनकी शारीरिक मृत्यु पर उनकी आत्मा (प्राण) को उनके शरीर से अलग कर दिया जाता है और अधोलोक में डाल दिया

जाता है (तुलना करें लूका 16:23-26)। पुनरुत्थान के समय, उनके शरीर को मसीहियों के शरीर के साथ फिर से जीवित किया जाएगा (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15)। उन्हें ऊपरी क्षेत्रों में मसीह के न्याय के आसन के सामने लाया जाएगा (मत्ती 24:40ख-41ख) जहाँ उन्हें सार्वजनिक रूप से दोषी ठहराया जाएगा। उन्हें नरक की अनन्त आग की सजा दी जाएगी (मत्ती 3:12ख)। विशेष रूप से परमेश्वर की दृष्टि में जो सही है, उसे करने की उनकी उपेक्षा का खुले तौर पर उल्लेख किया जाएगा (*पढ़ें* मत्ती 25:41-46), ताकि सभी को पता चले कि परमेश्वर का न्याय पूरी रीति से धर्मी है (लूका 12:47-48; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 15:3-4)।

(3) उन्हें नरक में अनंतकाल की सजा मिली है।

फिर उन्हें नरक में डाल दिया जाएगा जिनके पास आत्मा (प्राण) और शरीर हैं (मत्ती 10:28; 13:42; मरकुस 9:47-48; प्रकाशितवाक्य 20:15; प्रकाशितवाक्य 21:8)। नरक वह स्थान है जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार किया गया है (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 20:10)। यह वह स्थान है जहाँ शैतान और लोग हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति, प्रेम और महिमा से अलग रहते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। यह कभी न भुजने वाली आग में अनंतकाल का दंड और पीड़ा है (मत्ती 25:46; मरकुस 9:47-48; प्रकाशितवाक्य 21:8)।

इसका सटीक अर्थ क्या है, इसका खुलासा नहीं किया गया है। इब्रानी में शब्द "अनन्त" (इब्रानी: "ओलाम") का अर्थ है "एक लंबा समय", "एक जीवन की अवधि"। बाइबल का परमेश्वर किसी भी दर पर है "दयालु और अनुग्रहकारी, विलंब से क्रोध करनेवाला, प्रेम और विश्वास में लीन, उन हजारों लोगों से प्रेम बनाए हुए है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं (निर्गमन 20:6), और दुष्टता, विद्रोह और पाप को क्षमा करनेवाला है। फिर भी वह दोषी को छोड़ता नहीं है" (जब तक कि उनके पापों का प्रायश्चित न हो गया हो) (निर्गमन 34:6-7)। उसका न्याय बिलकुल धर्मी / न्यायपूर्ण होगा (लूका12:47-48; प्रकाशितवाक्य 15:3-4)। कैसे "उसकी दया उसके न्याय पर विजय होगी" (याकूब 2:13) को प्रकट नहीं किया गया है।

3. मसीहियों को सार्वजनिक रूप से प्रतिफल दिया जाएगा।

(1) उन्हें उनकी मृत्यु से पहले व्यक्तिगत रूप से धर्मी ठहराया जाता है।

जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं (मसीही, विश्वासी) वे पृथ्वी पर मरने से पहले ही बरी (धर्मी ठहराए, पूरी रीति से क्षमा) कर दिए जाते हैं (यूहन्ना 3:18क; रोमियों 3:22,24; रोमियो 5:1-2; रोमियों 8:1-2; इफिसियों 1:7-8; इब्रानियों 10:17-18)। मरने से पहले ही उनके पास अनन्त जीवन होता है (यूहन्ना 5:24-25; 10:28; 1 यूहन्ना 5:11-13)।

(2) उनके पुनरुत्थान के बाद वे सार्वजनिक रूप से धर्मी ठहराए जाते हैं।

अपनी शारीरिक मृत्यु पर मसीहियों की आत्मा (प्राण) को उनके शरीर से अलग किया जाता है और स्वर्गलोक में पहुँचा दिया जाता है (सभोपदेशक 12:7; लूका 16:22; 2 कुरिन्थियों 5:1, 7; फिलिप्पियों 1:23; इब्रानियों 12:23ख)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, मरे हुए मसीहियों की मानव आत्माएँ उसके साथ होंगी (1 थिस्सलुनीकियों 4:14), उनके शरीरों को गैर-मसीहियों के शरीरों के साथ ही फिर से जीवित किया जाएगा (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15) और एक अविनाशी संघ में उनकी महिमामय मानव आत्माओं को उनके महिमामय मानव शरीर के साथ फिर से एकीकृत किया जाएगा। तब वे अपनी आत्मा (प्राण) और महिमामय शरीर के साथ यीशु मसीह का स्वागत करने और प्रशंसा करने

के लिए बादलों में उठाए जाएंगे और इसके न्याय के लिए कि वे पृथ्वी पर कैसे रहते थे।

साथ ही मसीहियों को इसका लेखा भी देना होगा कि वे परमेश्वर के वचन के अनुसार कैसे रहे हैं (2 कुरिन्थियों 5:10; इब्रानियों 4:13)। परन्तु उन्हें सार्वजनिक रूप से पूरी रीति से धर्मी घोषित किया जाएगा क्योंकि यीशु मसीह की धार्मिकता को उनमें लगाया (डाला) (2 कुरिन्थियों 5:21) और दिया गया (1 कुरिन्थियों 1:30) है। विशेषकर उनके धर्मी कामों को स्मरण किया जाएगा (मत्ती 24:34-40), ताकि सभी को पता चले कि परमेश्वर का न्याय पूरी तरह से धार्मिकता से है। सभी मसीही और सभी स्वर्गदूत उसके अंतिम न्याय में भी परमेश्वर की धार्मिकता के विषय में गाएंगे (प्रकाशितवाक्य 15:2-4; 16:5-7)।

(3) उन्हें परमेश्वर के राज्य के अपने अंतिम चरण में अनंत काल के लिए प्रतिफल दिया जाता है।
प्रत्येक मसीही को उसके कर्मों / कार्यों (रोमियों 2:6; 1कुरिन्थियों 3:12-15) के अनुसार प्रतिफल दिया जाएगा। वास्तविक मसीहियों को कभी दोषी नहीं ठहराया जायेगा (विनाश) (यूहन्ना 5:24; रोमियों 8:1; इब्रानियों 10:17-18) और वे कभी नाश नहीं होंगे (यूहन्ना 10:28)! वे परमेश्वर के राज्य को उसके अंतिम चरण में प्राप्त करेंगे (मत्ती 24:34)। अपने अंतिम चरण में परमेश्वर का राज्य प्रतीकात्मक रूप से "स्वर्गीय यरूशलेम" है जो कि अंतिम न्याय के बाद नई पृथ्वी पर "नए यरूशलेम" के रूप में उतरेगा (प्रकाशितवाक्य 21:1-2,9-10)।

(4) पश्चाताप करने और बचने का और अवसर नहीं होगा।
जिस क्षण यीशु मसीह लौटेगा, तब से पछताने और बचने का और अवसर नहीं होगा (मत्ती 25:10-13; तुलना करें नीतिवचन 27:1; 2 कुरिन्थियों 6:1-2)!

ट. पाँचवीं घटना

सभी चीज़ों का नवीनीकरण

1. मसीह के दूसरे आगमन पर सभी चीजों का नवीनीकरण होगा।

यीशु मसीह के आने के एक और एकल दूसरे आगमन पर सभी चीजों का नवीनीकरण होगा। प्रभु का आना (यूनानी: परुसिआ) (2 पतरस 3:4) अधर्मी लोगों के लिए न्याय और विनाश का दिन (2 पतरस 3:7; तुलना करें मत्ती 19:28-29) और "प्रभु का दिन" होगा (2 पतरस 3:10), जब सभी चीजों का पुनर्स्थापन (यूनानी: एपोकैटास्टासिस) होगा (प्रेरितों 3:21), जब नया आकाश और नई पृथ्वी अस्तित्व में आएँगे (2 पतरस 3:10-13)। इस प्रकार, मसीह के दूसरे आगमन और सभी चीजों के नवीकरण के बीच कोई तथाकथित "हज़ार वर्ष का राज्य" नहीं होगा!

2. ब्रह्मांड की वर्तमान स्थिति को समाप्त कर दिया जाएगा।

दूसरे आगमन का दिन इस वर्तमान पुरानी पृथ्वी के इतिहास में अंतिम दिन होगा। वर्तमान सृष्टि को उसकी हताशा / अर्थहीनता (यूनानी: माटेओट्स) और क्षय के बंधन (यूनानी: फ्थोरास) (रोमियों 8:19-22) से मुक्त किया जाएगा। पृथ्वी के ऊपर सब कुछ जैसे सूर्य, चंद्रमा और सितारे, और पृथ्वी पर सब कुछ जैसे पहाड़ों और द्वीपों को, "हिला" (मत्ती 24:29) या "कंपा" (यूनानी: सैलीओ) (इब्रानियों 12:26-27; प्रकाशितवाक्य 6:12-14; 16:17-21), "भगा" (यूनानी: फुगो) (प्रकाशितवाक्य 20:11), "लुप्त / एक गर्जन के साथ भेज" (यूनानी: परेरकोमाई) (2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य

21:1) दिया जाएगा। तत्व आग में पिघल जाएंगे (यूनानी: कौसो) और "विघटित" (ग्रीक: लुओ) हो जाएँगे और पृथ्वी और इसमें सब कुछ *निश्चित रूप से* "नंगे कर दिए जाएँगे" (अर्थात ढूँढ लिए जाएँगे, प्रकाश द्वारा उजागर कर दिए जाएँगे) (यूनानी: हिउरिस्को) (भविष्य काल एक पूर्ण आश्वासन के रूप में) (2 पतरस 3:10)। सृष्टि और इतिहास में कुछ भी छिपा नहीं रह जाएगा (मत्ती 10:26; इब्रानियों 4:13)!

इस प्रकार उच्च क्षेत्रों (वायु) में लोगों का अंतिम न्याय (मत्ती 24:31; मत्ती 25:31 -32; 1 थिस्सलुनिकियों 4:17) पुराने ब्रह्मांड और पुरानी पृथ्वी के अंतिम न्याय के साथ-साथ होगा!

3. सृष्टि को नवीकृत और सिद्ध किया जाएगा।

मसीह के दूसरे आगमन पर हर चीज का नवीनीकरण होगा (मत्ती 19:28; प्रेरितों 3:21, तुलना करें प्रकाशितवाक्य 21:5)। यीशु मसीह नए आकाश (अपने सभी सितारों के साथ ब्रह्मांड) और नई पृथ्वी (2 पतरस 3:13; तुलना करें यशायाह 65:17) की स्थापना करेगा। वह सब कुछ नया बना देगा (प्रकाशितवाक्य 21:5)! इस प्रकार, परमेश्वर का राज्य अपने अंतिम और सिद्ध चरण तक पहुँच जाएगा (मत्ती 25:34)। मसीही एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी, धार्मिकता के घर की ओर दृष्टि लगाए हुए हैं"(2 पतरस 3:13)।

4. मेमने का विवाह।

(1) मसीह के दूसरे आगमन से पहले कलीसिया स्वर्गीय यरूशलेम है जो मेमने के विवाह के लिए स्वयं को तैयार कर रही है।

पूरे नए नियम की अवधि के दौरान कलीसिया ने मेमने के साथ विवाह के लिए स्वयं को तैयार किया (इफिसियों 5:25-27)। मसीह के दूसरे आगमन से पहले कलीसिया को "स्वर्गीय यरूशलेम" कहा जाता है (गलातियों 4:24-27; इब्रानियों 11:10,13-16,39-40; 12:22-24; 13:14) (पढ़ें यशायाह 54:1-5,11-12)। कलीसिया उन लोगों का समुदाय है, जिनकी नागरिकता स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20), परन्तु जो पृथ्वी पर भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं के रूप में कार्य करते हैं (1 पतरस 2:9-10)। मसीहियों के जीवन "परमेश्वर में मसीह के साथ छिपे हुए" हैं (कुलुस्सियों 3:1-4)।

(2) मसीह के दूसरे आगमन और सभी लोगों के अंतिम न्याय के बाद कलीसिया को "नया यरुशलेम" या "मेमने की दुल्हन" कहा गया है।

वह नई पृथ्वी पर मसीह के साथ मिलकर ऊपरी क्षेत्रों (जहाँ अंतिम न्याय हुआ) से उतरती है (प्रकाशितवाक्य 21:1-2, 9-10)।

"नया यरूशलेम" पुराने नियम की अवधि (इब्रानियों 11:10,16) और नए नियम की अवधि (इब्रानियों 13:14) से विश्वासियों के पूर्ण समुदाय का प्रतीक है। यह सभी युगों में रही कलीसिया का प्रतीक है, अर्थात, पुराने नियम की अवधि में कलीसिया (यूनानी: एकलीसिया) (भजन संहिता 107:32) और नए नियम की अवधि में कलीसिया (यूनानी: एकलीसिया) (मत्ती 16:18)। यह चुने हुओं की पूर्ण "पूरी संख्या" (यूनानी: प्लेरोमा) के लिए एक प्रतीक है, जिन्हें सृष्टि और सभी चीजों के नवीकरण के बीच धोखा नहीं दिया जा सकता है (मत्ती 24:22, 24, 31; रोमियों 8:28-30, 33); रोमियों 11:4-6, 25-26)!

(3) इस प्रकार यीशु मसीह का दूसरा आगमन "मेमने की शादी" के साथ पूरा होता है। (प्रकाशितवाक्य 19:7-8)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सात समानांतर खंड हैं (1-3, 4-7, 8-11, 12-14, 15-16, 17-19 और 20-22)। यीशु मसीह का दूसरा आगमन "मेमने की शादी" के साथ पूरा होता है (प्रकाशितवाक्य 19:7-8)। मेमने की शादी से पता चलता है कि प्रकाशितवाक्य 21:1-2, 9-10 में प्रकाशितवाक्य 19:7-8 का *समानांतर वर्णन* है। इसके अलावा "अंतिम लड़ाई" से पता चलता है कि प्रकाशितवाक्य 20:7-10 में प्रकाशितवाक्य 19:11-21 का *समानांतर विवरण* है।

- प्रकाशितवाक्य 20:1-6 (लगभग हजार वर्ष की अवधि) कालानुक्रमिक रूप से प्रकाशितवाक्य 19:11-21 से पहले नहीं आता है, बल्कि कालानुक्रमिक रूप से उसके बाद आता है!
- प्रकाशितवाक्य अध्याय 17-19 इस प्रकार प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 के समानांतर हैं!

5. अनन्त काल।

(1) नई पृथ्वी पर परमेश्वर की वाचा अपनी पूर्णता तक पहुँचती है!

पुराने नियम में वाचा का आरम्भ हुआ: "मैं (परमेश्वर) तुम्हारे बीच में चलूंगा और तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा, और तुम (पुराने नियम के समय के विश्वासी) मेरे लोग होगे" (उत्पत्ति 17:7; निर्गमन 6:2-7; लैव्यव्यवस्था 26:12)।

नए नियम में परमेश्वर के विश्वासियों को समाप्त या प्रतिस्थापित नहीं किया गया है, परन्तु इस वाचा को पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों से यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले विश्वासियों को सम्मिलित करने के लिए जारी और विस्तारित (बड़ा) किया गया है (2 कुरिन्थियों 6:16)।

और मसीह के दूसरे आगमन पर यह वाचा पूर्णता और सिद्धता पर पहुँचती है, क्योंकि दुनिया के सभी देशों के मसीही "उसके लोग" (बहुवचन) होंगे और नई पृथ्वी पर उसकी उपस्थिति में रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:3)।

(2) नई पृथ्वी पर सभी लोग और सब कुछ पूरी रीति से सिद्ध होगा!

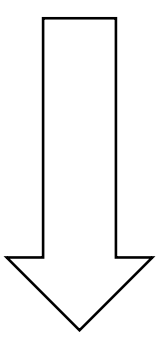
और अधिक आँसू, मृत्यु, शोक, रोना या दर्द नहीं होगा। सब कुछ नया बनाया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 21:4-5)। नई पृथ्वी खूब खिलेगी और बहुत फल देगी (प्रकाशितवाक्य 22:1-2; तुलना करें यशायाह 27:6)। जंगली जानवर नियंत्रित होंगे और घरेलू जानवरों के साथ शांति से रहेंगे। कोई भी दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचाएगा (तुलना करें यशायाह 11:6-9)। नई पृथ्वी एक ऐसी जगह होगी, जहाँ केवल धार्मिकता बसती है (2 पतरस 3:13)!

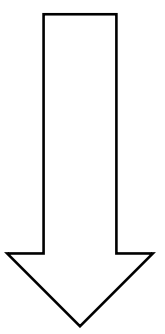
(3) नई पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य पूर्णता और सिद्धता तक पहुँचता है (मत्ती 25:34; 1कुरिन्थियों 15:23-28; प्रकाशितवाक्य 11:15-18)!

यीशु मसीह पुत्र के रूप में (मध्यस्थ के रूप में) राज्य (शासन) को पिता के रूप में परमेश्वर (1 कुरिन्थियों 15:24) को सौंप देगा (ग्रीक: पराडीडोमी) और स्वयं को (अपने मानव स्वभाव को) परमेश्वर पिता के अधीन करेगा (यूनानी-होपोटासो) जिसने अपना सब कुछ उसके अधीन किया था (मध्यस्थ के रूप में), ताकि पिता परमेश्वर सर्वप्रथम हो, अर्थात यह है कि परमेश्वर (बिना मध्यस्थ) सीधे सब लोगों और चीज़ों पर शासन करे (1 कुरिन्थियों 15:24)। इसका अर्थ है कि उद्धार के इतिहास के दौरान परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में यीशु मसीह का काम पूरा हो जाएगा।

परमेश्वर पिता और पुत्र परमेश्वर के *अलग-अलग कार्य* समाप्त हो जाएंगे। उनके पास समान कार्य होंगे। तब से "परमेश्वर और मेमना नए यरुशलेम का मंदिर और चिराग हैं" (प्रकाशितवाक्य 21:22-23)।

परन्तु यीशु मसीह का राज एक अनंतकाल का राज है (1 इतिहास 17:12ख, 14; यशायाह 9:6; 2 पतरस 1:11) और परमेश्वर के साथ मिलकर उसका राज हमेशा बना रहेगा (प्रकाशितवाक्य 11:15)! "परमेश्वर और मेमने का सिंहासन" हमेशा के लिए रहेगा (प्रकाशितवाक्य 22:1,3)।





ठ. दूसरे आगमन से पहले मसीहियों को कैसे रहना चाहिए

धीरज धरो और हृदय दृढ करो। तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को दृढ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन निकट है (याकूब 5:8)

अपनी परीक्षाओं में चौकस रहें। बहुत अधिक न खाएं और न पीयें और अपनी जीविका की चिंता न करें। चौकस रहो और प्रार्थना करो ताकि तुम उन परीक्षाओं से निकल सको (लूका 21:8-19) जो होने वाली है (क्लेश के समय में) ताकि तुम न्याय के सिंहासन के सामने खड़े होने के योग्य बन सको (लूका 21:34-36)

अपने जीवन में पवित्र और धर्मी बनों। परमेश्वर को एक दूसरे के प्रति आपके प्रेम को बढाने और उमड़ने दो ताकि तुम दूसरे आगमन के समय परमेश्वर की उपस्थिति में दोषरहित और पवित्र पाए जा सको (1थिस्सलुनीकियों 3:12-13; 2पतरस 3:12-13)

अपने काम में विश्वासयोग्य बनों। यीशु द्वारा आपको दिए गए काम को विश्वासयोग्यता और बुद्धि से पूरा करें (मत्ती 24:45-47; लूका 12:42-48)

ड. उद्धार के इतिहास का अवलोकन

